UNIVERSAL LIBRARY

OU_186124

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82/V82D Accession No. H2616

Author विष्णु प्रभाकर

Title आवारा / 1958

This book should be returned on or before the date last marked below.

डाक्टर

[मनोवैज्ञानिक नाटक]

विष्णु प्रभाकर

आत्माराम एन्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली

मूल्य : दो रुपये आठ आने (२·५०)
प्रथम संस्करण : मई, १९५८
आवरण : नरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
मुद्रक : युगान्तर प्रेस, दिल्ली

दो शब्द

अच्छा होता कि दो शब्द लिखे ही न जाते। नाटक जैसा है, है। उसके बारे में मैं क्या कहूँ और क्यों कहूँ। मेरी चीज है, अच्छी ही अच्छी होनी चाहिये।

लेकिन बात इतनी ही नहीं है। नाटक लिखा है तो खेला भी जाना चाहिये। आज जिस तेजी से खेले जाने वाले नाटकों की माँग आ रही है, उस तेजी से वे लिखे नहीं जा रहे; उसके कई कारण हैं। उन पर विचार करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है। शीघ्र ही वह कमी दूर हो जाएगी। मैंने भी जब यह नाटक लिखा तो इसी दृष्टि से लिखा। रंगमंच के कई जानकारों से सलाह ली। उनमें लेखक, आलोचक तथा निर्देशक सभी थे। दो बार दिल्ली की एक प्रगतिशील और सुप्रसिद्ध संस्था 'देहली आर्ट थियेटर' के कलाकारों के सामने इसे पढ़ा भी। काफी बहस हुई। काफी लोगों ने इसे पसन्द किया, कुछ संशोधन भी सुझाये। कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने इसके अन्त को आदर्शवादी बताया। अभिनय की दृष्टि से भी उनका मत है कि इसका तीसरा अंक सफलतापूर्वक रंगमंच पर प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, बहुत ही कुशल अभिनेत्री की जरूरत होगी। चित्रपट की बात और है।

एक बन्धु ने सुझाया है कि डाक्टर मरीजा को बचाने के स्थान पर मार क्यों न दे, कम से कम आपरेशन को बीच में ही छोड़कर भाग जाय। आखिर वह नारी है, नारी क्या नहीं कर सकती।

फिर वह नारी जिसके साथ अन्याय हुआ हो। पर अधिकांश मित्र इस बात से सहमत नहीं हैं। वह डाक्टर भी, जिन्होंने आपरेशन और रोग के सम्बन्ध में लेखक को पूरी जानकारी दी, इस बात से सहमत नहीं है। उनका कहना है कि तब तो यह डाक्टर के स्वभाव और आचरण के विरुद्ध हो जायगा।

यह सब अभिनय की दृष्टि से लिखा गया है। शेष नाटक जैसा भी है उसे पाठक पढ़े और जाने। मैं देहली आर्ट थियेटर, डा० श्रीकृष्ण, श्री नूर नबी अब्बासी, श्री जे० डी० सिंह तथा अन्य मित्रों का आभारी हूँ जिन्होंने बहुमूल्य सुझाव देकर रचना को अधिक से अधिक सुन्दर बनाने में योग दिया। पाठकों के सुझाव का भी मैं स्वागत करूँगा।

८१८ कुण्डेवालान
अजमेरी गेट
दिल्ली ६.

—विष्णु प्रभाकर

पात्र प्रवेश करने के क्रम से :

दादा	डा० अनीला के बड़े भाई, एक कर्नल : आयु ५०-५१ वर्ष
डा० मिसेज़ सईदा	अनीला की सहयोगी-डाक्टर : आयु २५-३६ वर्ष
नीरु	नर्सिंग होम की एक सनकी मरीजा : आयु ३५-३६ वर्ष
मिस लीला जोसेफ	नर्सिंग होम की एक नर्स : आयु २५-२६ वर्ष
सतीशचन्द्र शर्मा	मरीजा का पति : एक इंजीनियर : आयु ४४ वर्ष
रामू	नर्सिंग होम का सेवक : आयु ३० वर्ष
डाक्टर अनीला	नर्सिंग होम की मुख्य डाक्टर : आयु ३६-३७ वर्ष
गोपाल	मरीजा का बेटा : आयु १० वर्ष
काकी	अनीला की सेविका : आयु ६० वर्ष
डा० केशव	अनीला के अभिन्न : प्रसिद्ध एनसथेटिस्ट : आयु ४३-४४ वर्ष

मरीजा अन्तिम दृश्य में आती है। केवल लेटी रहती है। काकी का अभिनय करने वाली महिला मरीजा बन सकती है।

समय

१९५०-६० का भारत

स्थान

बम्बई अथवा कोई भी बड़ा नगर

पहला अंक

दृश्य १

(रंगमंच पर डा० अनीला के नर्सिंग होम में उनका दफ्तर। सामने के दरवाजे बरामदे में खुलते हैं। बाईं ओर का दरवाजा हमेशा नहीं खुलता। दाईं ओर के दरवाजे से सब आते-जाते हैं। मंच पर बाईं ओर जो दरवाजा है वह किसी दूसरे कमरे में जाता है जिसमें नर्स और दूसरे कार्यकर्त्ता बैठते हैं। दाईं ओर आराम करने का कमरा है। बरामदे वाले दोनों दरवाजों के बीच में एक अलमारी है। उसमें पुस्तकें हैं। दोनों ओर कलैण्डर या चार्ट हो सकते हैं। ऊपर घड़ी है। अलमारी के नीचे एक बड़ी मेज है जिसके चारों ओर कुर्सियां हैं। मेज पर दफ्तर का साधारण पर स्वच्छ सामान। दाईं ओर के द्वार के पास एक सोफा सेट है। उस पर आगन्तुक बैठते हैं। दीवारों पर अधिक नहीं केवल दो-चार चिकित्सालय संबन्धी जानकारी के चार्ट व चित्र हैं। बाईं ओर वाले दरवाजे के इस ओर एक खिड़की है। उससे इधर की ओर एक और मेज है जिस पर एक छोटा-सा अलमारी-नुमा बुक-केस है जिसमें डाक्टरी की किताबें हैं। मेज पर स्टेथ्स्कोप आदि रखे हैं। टेलीफोन बड़ी मेज पर है। फर्श पर नीली दरी और दरवाजों पर सुन्दर कलापूर्ण परदे हैं। ग्रीष्म ऋतु के एक सवेरे पर्दा उठता है। मेज पर दादा बैठे हैं। आयु पचास के ऊपर पर स्वस्थ-दबंग और सैनिक वेश में हैं। हाथ में पिस्तौल है। बाईं ओर की कुर्सी पर डा० सईदा बैठी है।

आयु उनकी ३५-३६ के आसपास है। इकहरा बदन और मुख पर आत्मविश्वास है। सफेद साड़ी पर सफेद कोट पहने है। हाथ में स्टेथस्कोप है। दोनों बातें कर रहे हैं।)

दादा

तो यह कहा नीरु ने कि हम सब मशीन हैं। ठीक भी है। (चार्टों को दिखाकर) इन चार्टों को देख कर यही कहा जा सकता है। लेकिन डाक्टर ! कुछ भी हो, हम आदमी की बनाई मशीन से फिर भी अच्छे हैं।

सईदा

जानतो हूँ, दादा। हमारे पास दिल है लेकिन वह कहती थी कि यह दिल भी मशीन का बना हुआ है।

दादा

(प्रभावित होने का नाट्य करते हुए) यह कहा उसने ! हमारे दिल मशीन के बने हैं। यानी...यानो हम सहज भाव से कुछ नहीं करते, हिसाब लगा कर करते हैं। (बराबर किसी वस्तु से खेलते रहते हैं)

सईदा

(चकित होने का नाट्य करती है) सच दादा ! उसने यही कहा कि तुम सब हिसाबदां हो, निरे हिसाबदां...

(सहसा बाहर से एक मरीजा का प्रवेश। अधेड़ उम्र (३५-३६), सिर पर पट्टी बँधी है। एक हाथ स्लिंग में है। मुख पर कुछ दीनता-सी झलकती है। उसे देखते ही दोनों चौंकते हैं।)

सईदा

लो वह आ गई , थिंक आव दी डैविल एण्ड शी इज़ देयर ।

दादा

(एकदम) नीरु, तुम यहां कैसे आई ?

नीरु

चल कर दादा । आपने बोलने को मना किया है, चलने को नहीं...

सईदा

नीरुजी, आप इतनी समझदार हैं फिर भी...

नीरु

समझदार हूँ तभी तो आना पड़ा । समझती हूँ कि चलने-फिरने से खाना-पीना पच जाता है । विचार तक पच जाते हैं । मुझे आप सब आधी पागल कहते हैं...

दादा

जब कि तुम पूरी पागल हो ।

नीरु

(चमक कर) पूरे पागल आप हैं । हमेशा हिसाब करते हैं और हिसाबदां पूरे पागल होते हैं ।

दादा

(हँस कर) नीरुजी, आप इन बातों की चिन्ता न करें...

नीरु

चिन्ता मैं कहां करती हूँ। इस चिड़ियाघर में कोई कर भी नहीं सकता। वह दीदी का काम है। मैं तो केवल आपको सूचना देने आई थी।

दादा

सूचना मिल गई।

सईदा

अब आप आराम करें।

नीरु

अजीब बात है, आप कहते हैं—आराम करो। प्रधान मन्त्री कहते हैं कि आराम हराम है। मैं समझती हूं कि वह सच कहते हैं। जब से दीदी यानी डाक्टर अनीला गई हैं तब से यहां आप ही आप आराम हराम हो गया है। सब हिसाब लगाने लगे हैं...

दादा

(मुस्कराकर उठते हैं) मैं कहता हूं कि आप अपने कमरे में जाएं। आपका स्वास्थ्य ऐसा नहीं है कि...

सईदा

(उठती है) चलिये मैं आपको छोड़ आऊं।

(बरबस पर सावधानी से उन्हें बाहर ले जाती है।)

दादा

(घमते हुए) अनीला को गये अभी पन्द्रह दिन भी नहीं हुए हैं कि सबका आराम हराम हो गया; सब हिसाब

लगाने लगे। वाह, क्या भाषा बोलते हैं लोग...

सईदा

(जाते-जाते मुड़ कर) यह सब इसीलिये है दादा, कि उन्हें सब लोग बहुत प्यार करते हैं। उनके बिना रह नहीं सकते।

(जाती है)

दादा

लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि वह अपनी जान दे दे। दो साल से वह नर्सिंग होम से बाहर नहीं गई। अब गई है तो...

(तेजी से नर्स, मिस लीला जोसेफ का प्रवेश, आयु २५-२६ वर्ष, वर्ण श्याम, नयन चुकीले, स्नेह पूर्ण, बदन इकहरा, मुख पर चंचलता, सदा तेजी में रहती है।)

लीला

दादा, एक नया केस आया है।

दादा

नया केस, कौनसा ?

लीला

बिल्कुल नया।

दादा

यानी उनके पास मंजूरी नहीं है। कौन लोग हैं ?

लीला

बड़े लोग हैं। मरीजा के पेट में बड़ा तेज दर्द उठता

है। बड़ी उल्टियां आती हैं। बड़ी दुर्बल है।

दादा

(एकदम) बड़े-बड़े, लेकिन मैं पूछता हूँ वे बड़े हैं कौन ?

लीला

जी बड़े इंजिनियर हैं। बड़ी दूर आसाम से बदल कर पूना आये हैं।

दादा

ओह ! वे बड़े इंजिनियर नाम क्या बताते हैं।

लीला

श्री एस० सी० शर्मा—श्री सतीशचन्द्र शर्मा।

दादा

(सोचते हुए) सतीशचन्द्र शर्मा—इंजिनियर, तुमने कहा कि वे आसाम से आये हैं ?

लीला

जीहाँ। पूना में लगे हैं पर रहने वाले झांसी के हैं।

(सहसा बाहर तेज आवाज उठती है) 'डाक्टर ! डाक्टर साहब !' (दादा चौंकते हैं।)

दादा

(चौंक कर) झांसी के इंजिनियर श्री सतीशचन्द्र शर्मा। गोरे-गोरे, गठे हुए बदन के, अफसरी शान में बड़ी-बड़ी बातें करते हैं।

लीला

जी हां वही। आप उन्हें जानते हैं? वह अपनी पत्नी को भरती कराना चाहते हैं...

(दादा सहसा घूमने लगते हैं।)

लीला

तो क्या कहूं दादा ?

दादा

लीला ! उनसे कह दो कि वह लौट जाएं।

लीला

(अनबूझ-सी) जी क्या...

दादा

(धीरे से) उनसे कह दो कि वह लौट जाएं...देखती क्या हो, जाकर कह दो। (वह फिर भी नहीं जाती) अरे तुम सुनती क्यों नहीं, मिस जोसेफ। मैं कह रहा हूँ कि उनसे जा कर कह दो कि मरीज़ा के लिए इस नर्सिंग होम में जगह नहीं है।

लीला

(एकदम) अच्छा दादा (मुड़ते-मुड़ते) लेकिन दादा...

दादा

(दृढ़ स्वर) बहस मत करो सिस्टर। उन्हें जाना होगा।

लीला

दादा सुनो तो...

दादा

(तेज होकर) जाओ...

तेजी से डाक्टर सईदा का प्रवेश)

सईदा

लीला, जल्दी करो। श्रीमती शर्मा की तबियत बहुत खराब हो गई है। उल्टियां आ रही हैं। उषा को मैंने दवा बता दी है। तुम जाकर उन्हें कमरे में लिटाओ। केस सीरियस है।

लीला

अभी जाती हूं।

(एक बार दादा को देखकर झिझकती है फिर तेजी से जाती है।)

सईदा

दादा! ये लोग बिना किसी सूचना के आगये हैं। मरीजा की हालत बहुत खराब है।

दादा

सुन चुका हूँ पर यहां उनके लिए जगह नहीं है। उन्हें जाना होगा।

सईदा

(चकित) क्या...क्या आप उन्हें जानते हैं?

दादा

मैं हर सवाल का जवाब नहीं दे सकता। उनसे कह दो कि वे चले जाएं।

सईदा

(एकदम हत्प्रभ) जी, जीहां, कहे देती हूँ।...दादा।

क्या बात है ? क्या आप...

दादा

(**एकदम कांप कर**) कुछ नहीं, कोई बात नहीं (**दृढ होकर**) मैं उन्हें इस नर्सिंग होम में दाखिल नहीं करूंगा।

सईदा

पर क्यों ? वह बहुत बीमार है, दादा।

दादा

(**पूर्वतः**) कोई चिन्ता नहीं। हुआ करे।

सईदा

लेकिन आज से पहले तो इस नर्सिग होम में कभी ऐसा नहीं हुआ।

दादा

जो अब तक नहीं हुआ वह आगे भी नहीं होगा, ऐसा कोई नियम है क्या ?

सईदा

नियम मैं नहीं जानती और न आपसे बहस कर सकती हूँ। पर इतना जरूर जानती हूं कि जहां तक हो सकता है इस नर्सिंग होम से किसी को लौटाया नहीं जाता। इसलिये जब डाक्टर अनीला इस घटना के बारे में सुनेंगी तो...

दादा

(**एकदम**) तो वह नाराज होंगी।

सईदा

ज़रूर होंगी।

दादा

डाक्टर सईदा ! मुझसे ज्यादा अनीला को जानने का दावा मत करो। इस मरीजा को इस नर्सिंग होम में जगह नहीं मिलेगी।

सईदा

(हत्प्रभ) बहुत अच्छा। बहुत अच्छा...

(वह जाने को मुड़ती है कि तभी बाहर से तेज घबराई आवाज आती है।)

सतीशचन्द्र शर्म

(करुण स्वर) डाक्टर, डाक्टर ! मरीजा को दौरा पड़ गया है। जल्दी आइये...मरीजा को दौरा पड़ गया...

(यह स्वर सुनते ही दादा का शरीर तन जाता है। सईदा ठिठकती है, डरती है।)

दादा

वह अन्दर नहीं आ सकता। तुम शीघ्र उन्हें विदा कर दो, शीघ्र...

सतीशचन्द्र शर्मा

डाक्टर, जल्दी आओ...जल्दी आओ।

दादा

जाओ।

सईदा

(जागकर) अभी जाती हूँ। अभी···

(तेजी से जाती है। दादा एकदम कुर्सी पर गिर पड़ते हैं। कई क्षण संज्ञाहीन से शून्य में ताकते है। तभी नर्सिग होम का सेवक रामू वहां आता है। मस्त, चिन्ताहीन ३० वर्षीय युवक, हाथ में आज की डाक है। ठिठकता है।)

रामू

दादा ! दादा !!

दादा

(चौंक कर तीव्रता से) क्या है ?

रामू

डाक है, दादा !

दादा

यहीं रख दो।

रामू

जीहाँ। रख तो देंगा ही। (रखता है) वह जो नया मरीज आया, हालत उसका ठीक नहीं। बराबर उल्टी, कै, वमन, डाक्टर कहता उसको दौरा है। दादा ! दौरा तो घूमने को बोलता। उसका पेट घूमता...

दादा

(चीख कर) तुम नहीं जाओगे !

रामू

जायेंगा, दादा ! जायेंगा नहीं तो और क्या करेंगा। पण आप ऐसा गुस्सा क्यों होता, और हम बता देताकि

डाक में मिस साहब का चिट्ठी है।

(जाता है। दादा तेजी से डाक देखते हैं और एक पत्र फाड़ कर पढ़ते हैं। धीमे-धीमे, फिर धीरे-धीरे, इतने तेज कि सब सुन लें)

...मां की तो पूछो मत। सपने में बड़बड़ाया करती हैं। हर मरीज का नाम लेकर पूछती हैं। उनको दवा बताती हैं। आदेश देती हैं। दादा, आपने मा को क्या बना दिया। कहती रहती हैं कि मरीज मेरी याद करते होंगे। दादा और डाक्टर सईदा के होते हुए भी मेरा मन वहीं पड़ा है।

दादा! यह स्वभाव की दासता है न? क्यों दादा! जो स्वभाव का दास बन जाता है वह मशीन नहीं बन जाता...

(एकदम पढ़ना बन्द करके)

मशीन! मशीन! सब मशीन की बातें करते हैं। क्या इस नर्सिंग होम में सब काम मशीन की तरह होता है? क्या अनीला मशीन बन गई है? क्या हमारे दिल भी मशीन के बने हैं? (अल्प विराम, दादा खड़े हो जाते हैं। पीठ पर हाथ करके घूमते हुए याद करके, बोलते हैं) मैंने कहीं पढ़ा था कि 'इन्सान का दिल मशीन है लेकिन ऐसी मशीन जो शोर को संगीत में बदल देती है।' संगीत में, यानी...

(तेजी से लीला का प्रवेश)

लीला

दादा! डा० सईदा ने पूछा है कि आपकी आज्ञा

हो तो उन्हें सात-आठ दिन की दवा दे दी जाय।

दादा

(चोट पीकर) क्यों न दे दो जाय ? डाक्टर से कहो कि वह मरीजा को अच्छी तरह देखे और हो सके तो किसी दूसरे नर्सिंग होम के लिए पत्र लिख दे।

लीला

जी...जी बहुत अच्छा।

(उसी तेज़ी से जाने को मुड़ती है।)

दादा

सुनो !...

लीला

(मुड़कर) मुझे बुलाया आपने ?

दादा

हाँ...क्या मरीजा की तबियत वाकई बहुत खराब है ?

लीला

अब कुछ ठीक है।

दादा

वे जा रहे हैं न ?

लीला

जीहां। उन्हें यकीन दिला दिया गया है कि नर्सिंग होम में बड़ी भीड़ है; सचमुच जगह नहीं है।

दादा

(फिर चोट पीकर) तुमने ठीक किया।

लीला

जी ! मैं जाऊं, वे राह देख रहे हैं (फिर मुड़ती है)

दादा

(एकदम) रुको।

लीला

(मुड़कर) जी वे...

दादा

(रुक-रुककर) लीला ! डाक्टर से कहो कि वह मरीजा को दाखिल कर ले।

लीला

(सकपका कर अनबूझ-सी) जो ई ई...

दादा

मैं कहता हूं कि मरीजा को दाखिल कर लिया जाय।

(पेपर वेट उछालता है।)

लीला

(हत्प्रभ) मरीजा को, दाखिल कर लिया जाय...।

दादा

हां...हां...

लीला

अपने नर्सिंग होम में !

दादा

जी हाँ...जी हाँ...जी हाँ...

लीला

(पूर्वतः अनबूझ) जी बहुत अच्छा। जी, आपने कहा नकि मरीजा को दाखिल कर लिया जाय।

दादा

तुमने ठीक समझा, हमने यही कहा।

लीला

जी...जी आप बड़े, बड़े ..

(भागती है। दादा तेजी से बैठते हैं, पेपर वेट तेजी से मेज पर गिर पड़ता है। तभी रामू आता है।)

रामू

दादा साहेब ! अपनकू छुट्टी चाहिये।

दादा

छुट्टी ! और तुमको।

रामू

हां दादा, अपनकू। अपनकू एकदम छुट्टी चाहिए।

दादा

एकदम छुट्टी चाहिए तो यमराज के पास अरजी भेजो।

रामू

वह तो अपन पैदा होने से पहले ही भेज आया था। पण फिलहाल अान इस नर्सिंग होम से छुट्टी चाहेंगा।

दादा

क्यो ?

रामू

क्यों क्या, दादा। अपनका जी नहीं लगता। बीमारों के साथ रहते-रहते अपनकी अक्ल भी बीमार पड़ गया। और जब से डाक्टर दीदी गया तब से तो दादा ! आपकी अक्ल भी, माफ करना दादा...

दादा

(शान्त पर तेज) रामू...

रामू

अपनने पहले ही माफी मांग लिया, पण दादा, अपनने गलत तो नहीं कहा, दादा।

दादा

रामू। मैं घर जारहा हूं। एक हफ्ते बाद लौटूंगा। डा० सईदा से कह देना !

रामू

जी...

दादा

और यह तार लिखा रखा है। अभी भिजवाना है। अनीला कल आ जाएगी...

रामू

जी...जी...

दादा

रामू ! ऐसा उल्लू की माफिक क्या देखता। डा० सईदा से कह दो कि मैं एक हफ्ते के लिए घर जा रहा हूँ। अनीला को तार भिजवा दें। वह कल आ जाएंगी। समझा...

रामू

दादा, आप नाराज क्यों होता। हमने कहा नहीं कि अपनकी अक्ल बीमार हो गया है। मिस साहब से इन्जेक्शन लगाने को बोला पण (दादा नहीं सुनते, चले जाते हैं) आप भी नहीं सुनता। इस अस्पताल में सब बीमार। आप भी बीमार...

(डा० सईदा का प्रवेश)

सईदा

क्या बात है रामू ! कौन बीमार है ?

रामू

आप !...ओह आप ! डाक्टर साहब ! दादा बोला कि हम एक हफ्ते के लिए घर जाता है। डाक्टर दीदी कल आ रहा है।

सईदा

क्या ! डाक्टर अनीला कल आ रही हैं।

रामू

जीहाँ। अपनकूं तार देने को बोला। अपन

जाता है।

(जाता है)

सईदा

समझ में नहीं आता, क्या बात है ?

(लीला आती है।)

लीला

डाक्टर ! ऊषा ने उनका सब इन्तजाम कर दिया है लेकिन यह क्या बात है...

सईदा

क्या बात ?

लीला

कि दादा एकाएक चले गये और डाक्टर दीदी एकाएक आ रही हैं।

सईदा

सुना तो मैंने भी है...

लीला

बड़ी अजीब बात है। क्यों डाक्टर, आपको यह बड़ा अजीब नहीं लगता ?

सईदा

क्या...?

लीला

दादा का इस तरह बर्ताव करना...

सईदा

लीला ! दूसरों की जिन्दगी में इतना गहरा जाने की कोशिश मत करो। अपना काम देखो। जाओ...

(तेजी से नीरु का प्रवेश)

नीरु

(आते-आते) बिना गहरा जाये क्या कुछ हाथ लगता है डाक्टर।

सईदा

आप फिर आ गईं।

नीरु

आना पड़ा डाक्टर। आपने कुछ सुना ?

सईदा

(चिढ़चिढ़ाहट) क्या ?

नीरु

इस नर्सिंग होम में भूचाल आने वाला है।

लीला

आने वाला है ? मैं तो समझी थी कि आ चुका।

सईदा

ओह ! तुम लोग नर्सिंग होम की इतनी चिन्ता क्यों करते हो। अपनी ओर क्यों नहीं देखते। मेहरबानी करके अपने कमरे में जाइये। मिस जोसेफ इन्हें ले जाओ।

(लीला नीरु को सहारा देकर ले जाती है।)

नीरु

(जाते-जाते) घर वालों से कहना कि वह घर की चिन्ता न करें, औलाद से कहना कि वह अपनी मां के बारे में न सोचें। जान पड़ता है डाक्टर कि आप भी बीमार हैं। यहां सब बीमार हो गये हैं। अधिकारी भी बीमार, नौकर भी बीमार, डाक्टर भी बीमार। बेचारा बीमार...

लीला

(जाते-जाते) मजबूर होकर उस बेचारे को डाक्टर बनना पड़ रहा है।

(दोनों हंस पड़ती हैं। सईदा तेजी से उन्हें देखती है पर वे बाहर हो चुके हैं और परदा गिर रहा है। सईदा उसी तरह पुस्तकें लिए पीछे-पीछे जाती है। पटाक्षेप।)

दृश्य २

दूसरे दिन सबेरे

(पहले दृश्य वाला स्थान : परदा उठने पर वहां कोई नहीं दिखाई देता। क्षणभर बाद नर्सों वाले कमरे से मिस लीला और रामू बातें करते-करते आते हैं और ठीक-ठाक करने लगते हैं।)

लीला

रामू ! तुम तो बहुत दिन से दीदी के साथ हो। क्या वह हमेशा ही ऐसी थी ?

रामू

मिस साहब ! अपनने तो नर्सिंग होम का नींव रखवाया। आपने अपनका फोटो नहीं देखा ? मिनिस्टर साहब को चांदी का तसला में मसाला अपनने ही दिया। अपनकू ठीक मालूम कि दीदी तब भी तप करता था। दादा को पिस्तौल और दीदो का तप...

लीला

(एकदम) क्यों रामू ! दादा यह पिस्तौल क्यों लिए रहते हैं ?

रामू

अपनकू ठीक-ठाक मालूम नहीं, पण एक बार अपनने देखा कि दादा ने पिस्तौल से बहुत सी मूलियां काट डालीं...

लीला

(रुक कर) मूलियां...

रामू

हां मिस साहब, अपन को बीमारी की कसम जो झूठ बोला। अपन एकदम सत्यवादी...शोत्तोबादी। अपन थोड़ा-थोड़ा बंगला भी सीखंगा।

लीला

(हंसती हुई) सो तो तुम करेंगा लेकिन मूलियां क्यों काटीं ?

रामू

मिस साहब ! आपकू पता नहीं; लड़ाई में सिपाहियों को गाजर-मूली की तरह काटते हैं ।

लीला

पर यह तो मुहावरा है ।

रामू

मिस साहब ! अपन भी तो मुहावरा बोला । दादा ने अपनकू बहुत मुहावरे बताये । जैसे घास काटना, कान काटना, पेट काटना और हां, जेब काटना पण खैर, अपन तो सिर्फ कान काटने में यकीन करता और आप पेट और जेब काटने में । (धीरे से) पण मिस साहब ! दादा शायद किसी को एक दम काट डालना मांगटा तभी उन्होंने शादी नहीं किया ।

लीला

(चकित)शादी नहीं किया ? तो दादा गांव में किसके बाल-बच्चों के पास जाते हैं ।

रामू

मिस साहब ! आप अभी बच्चा हैं । वह शादी तो पिछले जन्म में रही...

लीला

पिछले जन्म में...क्या मतलब...

रामू

मतलब यह कि मिस साहब ! जब वह शादी हुई तो

दादा कर्नल नहीं था। किसी कूं जब ऊँचा पद मिल जाता तब वह दूसरी शादी करना मांगटा यानी एक शादी शादी की उमर में होता, दूसरी शादी अफसरी की उमर में, एक शादी धरम की शादी, दूसरी रुतबे की (हंसकर) आपकी भी मिस साहब दो शादी होगा...

लीला

(बनावटी क्रोध) मूर्ख शैतान। दीदी ने सर चढ़ा-चढ़ा कर दिमाग खराब कर दिया है।

रामू

(हँसता हुआ) सच मिस साहब। यहां सबका दिमाग खराब होना मांगता। हमारे गुरु ने ठीक बोला कि अस्पताल में मरीज अच्छा होता पण जो अच्छा है वह बीमार हो जाता। एक बार अपनने दीदी को बोला—दीदी! आप कभी आराम करना क्यों नहीं मांगता।

लीला

(सोफे पर बैठ जाती है) तब दीदी ने क्या कहा?

रामू

(पूर्वतः काम करता हुआ) दीदी बोला—काम करना आराम करना है। कभी तुमने सूरज को आराम करते देखा है।

लीला

सूरज की खूब कही। वह भी क्या आदमी है।

रामू

अपन भी यही बोला। अपन ने कहा—सूरज देवता है। देवता कभी नहीं सोता, कभी नहीं थकता। दीदी ने एकदम बोला—वह भी देवता बनेगा। फिर कभी नहीं थकेगा। कभो नहीं सोयंगा...

लीला

दीदी को मजाक करना खूब आता है।

रामू

(धीरे से पास आकर) मिस साहब ! अपनकू को ऐसा लगता जैसे मजाक करने वालों के भीतर कोई बड़ा तेज दर्द होता, तीखा-तीखा बेचैन करने वाला (जोर से) पण खैर दीदी ने मजाक किया तो अपनकू रास्ता मिल गया। बोला, दीदी ! देवता लोग सुरग में रहता और सुना कि उधर का पासपोर्ट हार्टफेल हो जाने पर ही मिलता। (फिर काम में लग जाता है)

लीला

(उठती हुई) जवाब तुमने खूब दिया। दीदी को बोलते न बना होगा।

रामू

हां मिस साहब ! बोलता क्या, हसां, खूब हसां... जब किसी को बोलते न बनता तो वह गुस्सा करता या हँसता।

(तभी हँसी की खिलखिलाहट पास आती है। दोनों चौंककर बाहर को देखते हैं।)

लो वह आ गई। हँसना मांगता तब जरूर गड़बड़ हैगां।

(तभी हँसते हुए डा० अनीला और डा० सईदा का प्रवेश। डा० अनीला साड़ी पहने और जूड़ा बांधे है। आयु ३६-३७ के लगभग है पर लगती २७-२८ वर्ष की है। मुख पर सिपाही की-सी दृढ़ता और दार्शनिक की-सी प्रौढ़ता है। उनके आते ही रामू तेजी से नमस्कार करके बाहर चला जाता है। मिस लीला कुछ कागज लेकर मेज पर रखती है।)

अनीला

क्यों लीला ! नई मरीजा के कागज ले आई ?

लीला

जीहां ! ये रहे।

अनीला

ठीक है। इन्हें देखकर मैं अभी तुम्हारे साथ चलती हूं।

सईदा

लेकिन दीदी ! अभी आपको आये देर कितनी हुई है। आते ही मरीजा...

अनीला

(हँसकर तुरन्त) मरीजा के लिए ही तो आई हूं। दादा

की बात मेरी समझ में नहीं आरही । मुझे बुलाकर वह न जाने क्यों चले गये...

सईदा

वह तो मैंने बताया था न कि आपको तार देकर...

अनीला

हां, वह और भी...

(तभी सहसा बाहर जोर का शोर उठता है । रामू किसी को जोर से धमकाता है पर एक बालक-स्वर उससे भी ऊपर उठ जाता है ।)

गोपाल

(तेज स्वर) मैं अभी मिलूंगा । मैं डाक्टर साहब से अभी मिलूँगा ।

रामू

नई, नई, कल सबेरे आने को बोलेंगा । मिलने के वक्त मिलेंगा ।

गोपाल

मुझे एक बात कहनी है । बस एक बात ।

रामू

कल कहेंगा । एक नहीं दस कहेंगा, पर कल...

गोपाल

नहीं, नहीं मैं अभी कहकर चला जाऊंगा...

रामू

(तेज) अरे रुक...रुक । डाक्टर दीदी अपनकी जान

निकाल देंगा। अरे (पास आकर) अरे रुकता क्यों नहीं रे...

(झगड़ते हुए दोनों अन्दर आ जाते हैं।)

गोपाल

डाक्टर साहब ! डाक्टर साहब !!...

रामू

अपनने बहौत रोका दादो, पण यह तूफान...

(अनीला उस सुन्दर स्वस्थ बालक को देखते ही चौंकती है। आयु दस के लगभग है पर बड़ा ही चतुर व चंचल जान पड़ता है।)

अनीला

(एकदम) यह कौन है ?

रामू

नई मरीजा का बेटा।

सईदा

यह गोपाल है, दीदी।

गोपाल

बस मैं एक बात कहूंगा, बस एक बात।

अनीला

तो यह नई मरीजा का बेटा है।

रामू

दीदी। यह बड़ा ही शैतान...

अनीला

(एकदम) तुम जाओ रामू (रामू जाता है) बैठो गोपाल।

गोपाल

जी बैठ गया (बैठ जाता है)

अनीला

तुम्हारी मां बीमार है ?

गोपाल

जीहां, तभी तो आपके पास आई है। आपका नाम सुना था...

अनीला

(बराबर देखती रहती है) तुमने सुना था...

गोपाल

जीहां, सुना था तभी तो...

अनीला

किससे सुना था ?

गोपाल

पिताजी से सुना था। कहते थे कि आप बहुत बड़ी डाक्टर हैं।

अनीला

(हंसकर) तुम्हारा क्या ख्याल है ? कुछ बड़ी दिखाई देती हूँ।

गोपाल

हां, हां, मुझसे बहुत बड़ी हैं। (पास आकर खड़ा हो जाता है) देखो, मैं कितना छोटा हूँ। पिताजी कहते थे...

सईदा

और तुम नहीं कहते फिरते कि डाक्टर अनीला बहुत

बड़ी डाक्टर हैं। वे मेरी मां को अच्छा कर देंगी। दीदी! मां को यही कहकर तसल्ली दिया करता है।

गोपाल

पिताजी कहते थे...

अनीला

(एकदम) अच्छी बात है। मैं तुम्हारी मां के कागज देखकर अभी आती हूँ।

गोपाल

पिताजी कहते थे कि आपके आते ही...

अनीला

(आज्ञा के स्वर में) लीला! तुम गोपाल को लेकर जाओ। उषा को मेरे पास भेज दो। हम सब अभी उधर आते हैं...

लीला

आओ तो गोपाल...

गोपाल

नहीं, नहीं, पिताजी कहते थे...

अनीला

पिताजी ने यह भी तो कहा होगा कि डाक्टर जो कहे उसे मानना। जाओ, हम अभी आते हैं। तुम तो अच्छे बेटे हो।

गोपाल

जीहां, पिताजी कहते थे...

(सब हँस पड़ते हैं। लीला और गोपाल मुड़ते हैं, अनीला उन्हें देखती है। मुड़ते-मुड़ते गोपाल कहता है)

क्यों डाक्टर साहब! मेरी मां अच्छी हो जाएगी ना?

अनीला

हां, हां, यहां सब अच्छे होने के लिये ही आते हैं।

गोपाल

और हो जाते हैं। पिताजी कहते थे...

(दोनों जाते हैं। अनीला उधर देखती-देखती ध्यानस्थ-सी हो जाती है।)

सईदा

क्या सोचने लगीं, दीदी!

अनीला

कुछ नहीं सईदा...ऐसा लगता है कि जैसे इसे पहले भी कहीं देखा है।

सईदा

सच दीदी! मुझे भी ऐसा ही लगा था। शशि और इसकी आंखें...

अनीला

(कांपकर) शशि और इसकी आंखें! वही तो, वही तो मुझे भी भ्रम हुआ, और आंखें ही क्यों? (तेजी से कागज

पलटती है) क्या नाम है इसके पिता का, (पढ़ती है) सतीशचन्द्र शर्मा...

सईदा

जीहां, झांसी के रहने वाले हैं। अभी तक आसाम में थे, अब पूना में...(अनीला हठात् पीली पड़ जाती है) दीदी, दीदी, क्या बात है ? क्या हुआ आपको ?

अनीला

(एकदम तेज़) मैं पूछती हूँ कि इसे किसने दाखिल किया ? किसकी आज्ञा से...

सईदा

क्षमा करें दीदी ! यह सब दादा ने किया है। एक बार तो उन्होंने मना कर दिया था पर...

अनीला

(पूर्वतः तेज़) मैं कहती हूँ कि इन्हें निकाल दो...

सईदा

दीदी !

अनीला

(पूर्वतः तेज़) हां, मैं ठीक कहती हूं कि इस मरीजा के लिये इस नर्सिंग होम में स्थान नहीं है।

सईदा

लेकिन दीदी ! सोचो तो दाखिल करने के बाद...

अनीला

(धम्म से बैठ जाती है) ओह, ओह, तो उससे कहो कि वह

खुद चली जाये। ओह, मैं क्या करूँ (सिर मेज पर रख देती है।)

सईदा

आपकी तबियत शायद कुछ अधिक खराब है। आप आराम करें। मैं रामू को भेजती हूं। (पुकारती है) रामू...

अनीला

(एकदम उठ कर) नहीं, नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूं। अभी आती हूं। मैं अभी मरीजा को देखूंगी। कृपा कर किसी से कुछ न कहना। हां, एक कप चाय तो भिजवा दो।

(तेजी से अन्दर जाती है। सईदा ठगी-सी बाहर जाती है। तभी रामू आता है।)

रामू

इधर तो कोई नहीं। अपनकू कौन पुकारता था ? अजीब बात है, अब तो इस होम में नई-नई बातें होने लगा...

(नीरु का तेजी से प्रवेश)

नीरु

दीदी ! दीदी !! क्या मैं सचमुच पागल हूँ।

रामू

जीहां (एकदम) अपनको तो यहां सभी पागल नजर आते।

नीरु

जो पागल होता है उसे सभी पागल नज़र आते हैं। (हँसती है)

रामू

(तेज़ी से) क्या ? क्या बोला (सहसा हँस कर) बोला तो तुमने ठीक। इतना दिन हो गया पर अपनको पता नहीं लगा कि...

नीरु

क्या ?

रामू

(धीरे से) यही कि दीदी सचमुच विधवा है या सचमुच सधवा।

नीरु

(ठहाका मारकर) तू ज़रूर पागल है। आजकल विधवा और सधवा में कोई अन्तर नहीं होता। दोनों स्त्रियां होती हैं।

रामू

(उसी तरह हंसता है) अपनी दीदी स्त्री है ! ना बाबा, ना।

नीरु

तो क्या है ?

रामू

मां...

नीरु

मां...हूं ऊं-ऊं...अब समझ में आया। मैं भी कहूँ कि दीदी के भीतर यह गांठ कैसी है ? वह बराबर मां

बनने की कोशिश करती रहती हैं जबकि अभी उन्हें खुद मां की जरूरत है।

रामू

(चकित) क्या आ...(फिर सिर हिलाकर) बात अपनकू भी जंचती है।

नीरु

जंचनी ही चाहिये। जिसे प्यार मिला ही न हो वह देगा क्या। लेकिन हां, दीदी है कहां ?

रामू

अपन भी तो यही सोचता है।

(तभी अन्दर से अनीला और बाहर से सईदा आती हैं।)

अनीला

सईदा ! मैंने सब काग़ज देख लिये हैं, अब मरीजा को देखना है। चलो।

सईदा

लेकिन आपकी तबियत खराब है। उषा चाय ला रही है।

नीरु

दीदी, दीदी। ओह दीदी, नई मरीजा आपकी कोई...

अनीला

(तेजी से) सईदा ! नीरु को आज ही छुट्टी दे दी जाय।

सईदा

जी...

नीरु

दीदी, दीदी !

अनीला

(क्रुद्ध) मैं यह सब नहीं सह सकती। तुम लोगों को जो सुविधाएं दी गई हैं वे इसलिए नहीं कि तुम दूसरों के बारे में ऐसी वैसी बातें कहती फिरो। तुमसे किसने कहा कि...

नीरु

मैं पगली हूं दीदी, पगली...मुझे माफ कर दो।

अनीला

तुम पगली नहीं हो, तुम्हें यह जगह आज ही छोड़ देनी होगी।

(तेजी से जाती है।)

नीरु

दीदी, दीदी !

(अनीला के पीछे-पीछे जाती है। सईदा भी। रामू ठिठकता है।)

रामू

अपन को कुछ समझ में नहीं आया, यह नर्सिंग होम है, या चिड़ियाघर है, या पागलखाना है या थोड़ा-थोड़ा सब कुछ।

(जाता है और परदा गिरता है।)

दूसरा अंक

दृश्य १

सात दिन बाद

(रंगमंच पर डा० अनीला के घर का दफ्तर, लगभग पहले अंक के कमरे जैसा कमरा है। परन्तु यहां सब लोग सामने के बाईं ओर वाले द्वार से आते हैं। मंच पर बाईं ओर का दरवाजा रसोईघर में जाता है और दाईं ओर वाला शयनकक्ष में। चार्टों के स्थान पर चित्र है। एक महात्मा बुद्ध का, दूसरा गान्धी का। ऊपर एक तैलचित्र है जिसमें हिममण्डित गिरिशृंगों से घिरे बीहड़ पथ पर एकाकी मानव दृढ़ता से बढ़ा चला जा रहा है। दाईं ओर के द्वार से कुछ इधर एक सुन्दर सोफा सेट है। आसपास दो तिपाइयां हैं जिन पर एक-एक कलापूर्ण खिलौना रखा है। बीच में एक अपेक्षाकृत बड़ी तिपाई है जिस पर ताजे फूलों का गुलदस्ता रखा है। इसी दरवाजे के पास कारनिस है। उस पर एक पक्षी का कलापूर्ण जोड़ा है। उसके बीच में एक नारी की प्रतिमा, जिसमें मूर्तिकार ने नारी के सौन्दर्य, मातृत्व और साहस को जीवन दिया है। एक ओर उसने शैशव की उंगली पकड़ी है, दूसरी ओर वह यौवन के कन्धे को दृढ़ता से सहारा दिये है। परदा उठता है और अनीला मेज पर बैठी बड़ी व्यस्तता से एक पुस्तक का अध्ययन कर रही है। बीच-बीच में गरदन उठा कर चारों ओर देखने लगती है। इसी बीच डा० सईदा वहां आती है।)

सईदा

अरे वाह ! आप अभी तक पढ़ रही हैं। कपड़े भी नहीं बदले।

अनीला

लेकिन बिचार बदल दिया है। मैं अब नहीं जाऊंगी।

सईदा

पर डाक्टर केशव आपकी इन्तजार देखेंगे।

अनीला

यह उनके लिए और भी अच्छा होगा।

सईदा

(मुस्करा कर) लेकिन इन्तजार की भी एक हद होती है।

अनीला

(मुस्करा कर) इन्तजार की कोई हद नहीं होती, सईदा ! हद होती है मंजिल की। अच्छा खैर, उनको टेलीफोन कर दिया है कि वह यहीं आ सकते हैं। और सुनो सईदा, मैं बहुत जल्द वह आपरेशन कर डालना चाहती हूं। अगर्चे एक्सरे में अभी कुछ नहीं आया लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि गाल ब्लेडर में पथरी है।

सईदा

लगता तो ऐसा ही है। बड़े खराब दौरे पड़ते हैं। बराबर उल्टियां होती हैं। कमजोर बहुत है। प्लूरेसी हो चुकी है न ?

अनीला

सो तो है लेकिन आज इन्ट्रावीनिस इन्जैक्शन देकर एक्सरे करना होगा। उससे सब कुछ स्पष्ट हो जायगा।

सईदा

वैसे दीदी ! आपका क्या खयाल है ? ऐसी हालत में आपरेशन करना रिस्क (खतरा) लेना नहीं है ?

अनीला

मरीजा की जैसी क्रिटिकल हालत है उसमें आपरेशन कर देना ही अच्छा है। डाक्टर को रिस्क तो लेना ही पड़ता है।

सईदा

जानती हूँ, लेकिन आप क्या केवल डाक्टर हैं ?

अनीला

(हठात् चौंक कर) क्या; क्या मतलब ?

सईदा

कुछ नहीं। वह नीरु कहती थी कि यह मरीजा आपकी कोई परिचित है।

अनीला

(कांपती है फिर तलखी से कहती है) और तुमने उसकी बातों का विश्वास कर लिया।

सईदा

करना पड़ता है।

अनीला

क्यों ?

सईदा

क्योंकि जिस स्नेह और लगन से इन सात दिनों में आपने उसका इलाज किया है उससे...

अनीला

(हल्की मुस्कान) ओह, तुम मुझ पर तोहमत लगा रही हो। औरों का इलाज शायद मैं इतने स्नेह से नहीं करती...

सईदा

(एकदम) नहीं, नहीं, यह बात नहीं। यह बात नहीं ! मुझे खेद है कि मैंने बात को ठीक तरह नहीं कहा।

अनीला

(हँस कर) अच्छा, अच्छा, दादा की कोई खबर आई ?

सईदा

नहीं तो, शायद अब की डाक में आई हो, देखती हूँ।

(तेजी से जाती है। अनीला एक क्षण उस ओर देखती है, फुसफुसाती है।)

अनीला

(स्वगत) दादा के बारे में कोई बात नहीं करना चाहता। सब मेरे बारे में बात करना चाहते हैं। मेरा और

मरीजा का...ओह । दादा ने यह किया क्या । (उत्तेजित होते हुए) यह क्या किया...

(दादा का प्रवेश, वही वेशभूषा, अनीला देख कर चौंकती है)

दादा !! आप ..

(आगे बढ़ कर पैर छूती है।)

दादा

(पीछे हटते-हटते) अरे, अरे बीसवीं सदी में यह क्या करती है !

अनीला

कुछ करने के लिए काल का बन्धन नहीं होता, दादा !

दादा

(हँस कर) डाक्टर जब फिलौस्फर (दार्शनिक) बनने लगता है तो यमराज का काम बढ़ जाता है। खैर, नई मरीजा को देखा ? क्या विचार है ?

अनीला

(दादा को देखकर) मुझसे पूछते हो ?

दादा

मरीजा का हाल डाक्टर से ही पूछा जाता है ।

अनीला

(व्यंग्य से) मैं डाक्टर कहां हूं ? डाक्टर आप है। मैं तो एक मशीन हूँ ।

दादा

लेकिन एक ऐसी मशीन जो टूटते जीवन को जोड़ने में विधाता से होड़ लेती है। जो मौत की छाया को जीवन की मुस्कान में बदल देती है।

अनीला

(तीव्र) लेकिन किसी के चलाने पर।

(तेज़ी से कह कर मुँह फेर लेती है।)

दादा

(उधर ही मुड़ कर) गुस्सा आ गया, अनीला। गुस्सा मत करो। मैं उसे बुलाने नहीं गया था।

अनीला

(एकदम तेज़) पर आपने उसे यहां भरती क्यों किया ?

दादा

क्योंकि वह बीमार थी और यह नर्सिंग होम बीमारों के लिए है।

अनीला

बीमारों के लिए है लेकिन दुश्मनों के लिए नहीं।

दादा

बीमार न दुश्मन होता है, न दोस्त। बीमार की कोई जाति नहीं होती।

अनीला

यह निरा शब्दों का जाल है। आप तो सिपाही हैं, आपको शब्दों से कब से मोह हुआ ? कब से...

दादा

जब से तुमने सिपाही पर सन्देह करना सीखा ! जानती हो एक इन्सान दूसरे इन्सान पर सन्देह क्यों करता है ?

अनीला

(तेजी से) मैं नहीं जानती। जानना भी नहीं चाहती।

दादा

लेकिन मैं बताना चाहता हूँ।...वह अपने पाप पर, अपने विश्वासघात पर पर्दा डालना चाहता है।

अनीला

(तेज होकर) मैं पाप कर रही हूँ, मैं विश्वासघात कर रही हूं ! किससे...

दादा

(तलखी से) अपने कर्तव्य से, अपने फर्ज़ से। क्या डाक्टर का यह कर्तव्य नहीं है कि वह मरीज का इलाज करे ? जो डाक्टर ऐसा नहीं करता उसे तुम क्या कहोगी। बोलो...

अनीला

(तेजी से सोफे पर गिरकर) दादा...दादा...आप मुझ पर इल्जाम लगा रहे हैं। उल्टे मुझे...

दादा

(पास आकर) अनी ! तुम्हारे दर्द को पहचानता हूं। मैं भी इन्सान हूं। एक बार मैने भी उसे लौटा दिया था।

अनीला

(तलखी से) वह सब सुन चुकी हूँ।

दादा

फिर भी मुझे दोष देती हो ? मैंने तो यही सोच कर कि तुम्हें बुरा लगेगा उसे दाखिल कर लिया।

अनीला

(एकदम) आपको यकीन था कि आप उसे दाखिल न करते तो मुझे बुरा लगता ?

दादा

बेशक ! तुम डाक्टर हो और एक डाक्टर को अपने नर्सिंग होम की मान-मर्यादा से बढ़ कर और किसी चीज़ से प्यार नहीं होता।

अनीला

नर्सिंग होम...नर्सिंग होम...(तिलमिलाती है, नारी की प्रतिमा के पास तक जाती है। फिर दादा की ओर मुड़कर पूछती है।) आपने उन्हें देखते ही पहचान लिया था ?

दादा

क्यों न पहचान लेता, लेकिन मैंने उसे अपने सामने आने का अवसर नहीं दिया।

अनीला

(व्यंग्य से) क्यों ?

दादा

क्योंकि मुझे डर था कि मैं उसे पिस्तौल का निशाना बना बैठता ।

अनीला

(एकदम तीव्र होकर) पिस्तौल का निशाना बना बैठते। आप पर इतनी बड़ी प्रतिक्रिया हुई और आप समझते कि मुझ पर कुछ भी असर न होगा ?

दादा

असर जिस पर नहीं होता वह पत्थर है परन्तु अनी ।

अनीला

ओह दादा तर्क...तर्क...मैं कहती हूँ...

दादा

ठहरो अनी । यह केवल तर्क की बात नहीं है । तुम्हें जितना जान पाया हूँ उससे मुझे विश्वास हो गया था कि तुम उसका इलाज करोगी । तुम कुछ और कर ही नहीं सकतीं ।

अनीला

(एकदम) मैं कहती हूं दादा । आप नहीं जानते, आप मुझे नहीं जानते । आपने...

दादा

में तुम्हें बहुत अच्छी तरह जानता हूँ ।

अनीला

(और भी तीव्र) नहीं, आप बिल्कुल नहीं जानते । आप नारी को नहीं जानते, आप चोट खाई हुई नागन को नहीं जानते ।

दादा

सब कुछ जानता हूँ । यह भी जानता हूँ कि नागन जहर है तो नारी स्नेह ।

अनीला

लेकिन यही स्नेह जब उबलता है तो नागन का जहर उसके सामने चन्दा की शीतलता बन जाता है । आप यह नहीं जानते । जानते होते तो कभी ऐसा न करते । ओह ! पन्द्रह वर्ष तक आप मेरे सम्बल बने रहे पर संकट के समय आपने मुझे धोखा दिया, सागर की तूफानी लहरों में फेंक दिया । आपने मुझे...

(सहसा दादा गुनगुना उठते हैं ।)

दादा

किसी शायर ने क्या खूब कहा है :

खुदा से कह दो लंगर उठा ले ना,
मुझे आज तूफ़ां की ज़िद देखनी है ।

अनीला

(तिलमिला कर) नहीं, नहीं, नहीं करूंगी, मैं उसका इलाज नहीं करूंगी। मैं उसे मार डालूंगी।

दादा

मार डालोगी ? सात दिन में तुमने उसका रूप पलट दिया है। उस लाश में जोवन डाल दिया है तुमने। उसे मारोगी ?

अनीला

हां, मार डालूँगी। यह सब आपके आने तक के लिए था। यह सब इसलिए था कि आपने...

(लीला का तेजी से प्रवेश)

लीला

मुझे अफसोस है डाक्टर...

अनीला

(तीव्र स्वर में) क्या बात है ?

लीला

मिसेज शर्मा को बड़ा तेज दौरा पड़ रहा है। बड़ा तेज दर्द है।

अनीला

(पूर्वतः) बड़ा, बड़ा। बड़ा तेज दौरा है तो फिर तुम यहाँ क्यों आई ? डाक्टर सईदा से क्यों नहीं कहा ?

लीला

उन्होंने ही तो मुझे भेजा है।

अनीला

तो उनसे कह दो कि इस वक्त मैं नहीं आ सकती।

लीला

लेकिन डाक्टर ! उनकी हालत बड़ी खराब है।

अनीला

खराब है तो मैं उसे ठीक नहीं कर सकती।

लीला

डाक्टर सईदा ने कहा है कि...

अनीला

(तीव्र होकर) मिस जोसेफ ! जो कुछ मैंने कहा क्या वह तुमने नहीं सुना। मैं इस वक्त नहीं जा सकती। नहीं जाऊंगी जाओ कह दो···

(लीला हैरान-परेशान मुड़ती है। दादा खूब जोर से हँसते हैं। अनीला तेजी से पुस्तक उठाती है, तभी तेजी से बदहवास गोपाल दौड़ा हुआ आता है।)

गोपाल

डाक्टर साहब ! दीदी साहब ! जल्दी चलिये, मेरी मां को बड़ी तकलीफ हो रही है। वह रो रही है (**रो-सा पड़ता है**) जल्दी चलिये।

अनीला

(**परेशान**) नहीं, नहीं, तुम्हारी माँ को कुछ नहीं होगा। डाक्टर सईदा वहाँ हैं, तुम जाओ।

गोपाल

नहीं, नहीं, उन्होंने आपको बुलाया है। आप चलें, आपके बिना चले मेरी माँ ठीक नहीं हो सकती। आप चलें, चलें ना। पिताजी ने कहा था कि···(रो पड़ता है)

अनीला

(एक दम) ओह, परेशान कर दिया तुमने और तुम्हारे पिताजी ने। (जोर से चीखकर) चले जाओ यहाँ से, निकल जाओ···

(तेजी से गोपाल का हाथ पकड़े निकली चली जाती है। पीछे-पीछे लीला जाती है। दादा फिर जोर से हँस पड़ते हैं और उठते है।)

दादा

दुर्बल इन्सान ! इसी दुर्बलता में से दया, करुणा, परोपकार बड़े-बड़े पुण्य कर्मों का जन्म हुआ है। इसी में से यह पिस्तौल निकली है। मैं दुर्बल न होता तो भला पिस्तौल क्यों लिए रहता। दया, करुणा, परोपकार और पिस्तौल···, ज्योमेट्री की पुस्तक में देखना होगा कि उनकी रेखायें किस एंगल पर मिलती हैं···

(अट्टहास, फिर सहसा चौंक पड़ता है। काकी बोलती हुई आती है। साठ के लगभग आयु है। रोबदाब से बातें करती है।)

काकी

जब देखो नई मरीजा के पास, जब देखो नई मरीजा

की चर्चा। तुम जानो सात दिन से उसके पोछे पागल है।

दादा

काकी तुम जानो, वह डाक्टर है।

काकी

अरे मैं सब जानूं। पर तुम जानो मैं डाक्टर-फाक्टर की बात न मानूं। भौत से डाक्टर आंख उठा के बी ना देक्खे। बोल्ले तो ऐसे जैसे भुक्खे भेड़िये। तुम जानो, राम तुमारा भला करे, यो तो सुभाव की बात है। भगवान ने ऐसी मिट्टी से गढा है कि बस जो काम लेल्लिया वो काम तुम जानो करके ही छोड्डा।

दादा

तुम जानो काकी। वो तो अच्छी बात है। है ण।

काकी

(**लम्बी सांस खींच कर**) है तो पर तुम जानो दादा, काम जिब्बी होगा जिब सरीर साथ देग्गा। सरीर गिर गया तो तुम जानो डाक्टरी-फाक्टरी सब धरी ना रह जागी। मका दादा, एक बात पुच्छुं।

दादा

पुच्छो काकी।

काकी

(**धीरे से**) इस छोरे की सकल-सूरत हूबहू अपनो ससि से मिले है। वैसी ही आँखें, वैसा ही नाक-नकस, वो

ही आवाज, वो ही सुभाव । तुम जानो दादा, उसके आते ही उठके साथ होले । बड़ा प्यार है उससे मका ।

दादा

प्यार तो उसे हर बच्चे से है । उनके लिये जान देती है ।

काकी

सो तो है पर तुम जानो दादा, इससे तो हद् है । मका, सच बताना, कौन है यह । तुम जानो ऊपर से सब ठीक है पर निच्चे ही निच्चे नरसिंग होम में बड़ी चरचा है...

दादा

(उत्सुकता से) किस बात की चर्चा है ? क्या कहते हैं?

काकी

कहे हैं कि यह नई मरीजा जरूर दीदो की कोई ...तुम जानो...

(सहसा नीरु का प्रवेश)

नीरु

ओह दादा, आप आ गये । आप हमारे नक्षत्र-मण्डल के सूर्य हैं । आपके चारों ओर ही तो हम सब ग्रह घूमते हैं । आपके जाते ही नरसिंग होम में सब उलट-पुलट हो गया ।

दादा

नीरु, तुम्हें अब छुट्टी देनी ही होगी । तुम्हें जानना चाहिए कि यह डाक्टर का नरसिंग होम है किसी फिलोस्फर का पागलखाना नहीं

नीरु

वाह दादा। फिलोस्फर तो आजकल आप बन रहे हैं। जब सिपाही ज्ञान बघारने लगता है तो सब कुछ उलट-पुलट हो जाता है जैसे कि यहां हो रहा है। सब काना-फूसी करने लगे हैं।

काकी

तुम जानो वही तो मैं भी कह रही थी। दादा, इसका कुछ बन्दोबस्त होना चाहिए नहीं तो ... नहीं तो। अच्छा इब तो मैं रसोई में जाऊं हूं, फिर बताऊंगी।

(नीरु की तरफ इशारा करके अन्दर जाती है।)

नीरु

मैं तो पागल हूं पर काकी ने बाल धूप में सफेद नही किये, दादा। यह नर्सिंग होम में अन्दर ही अन्दर बरफीला तूफान-सा कैसा उठ रहा है ? यह दीदी जो प्रशान्त महा-सागर की तरह शान्त रहती थी, रह-रह कर उसकी छाती ज्वालामुखी की तरह क्यों भभक उठती है ?

दादा

(तेज होकर एकदम) नक्षत्र-मण्डल का सूर्य, बर्फीला-तूफान, ज्वालामुखी, ओह तुम लोगों ने यह कैसा शब्दों का तूफान उठाया है। तुम लोग अपने-अपने घर क्यों नहीं जाते ?

नीरु

बीमार का घर नर्सिंग होम ही होता है ।

दादा

लेकिन बीमार को यह अधिकार किसने दिया कि वह अपनी बीमारी का ध्यान छोड़ कर दूसरों की चिन्ता करे ।

नीरु

(हँस कर) अपना दुख भुलाने के लिये दूसरों की चिन्ता करना इन्सान का स्वभाव है, फायदेमन्द जो है । है न दादा (जोर से हँसती है । दादा पिस्तौल पर हाथ रखते हैं) न न पिस्तौल को वहीं रहने दो । यह आपकी बुजदिली की निशानी है । ··· मैं आप से एक और बात कहती हूं । मरीज मैंने बहुत आते देखे हैं । उनमें खतरनाक भी होते हैं । रोना-पीटना भी होता है । नाटक भी होता है पर दीदी को मैंने कभी इस तरह बर्ताव करते नहीं देखा । कभी इस तरह बेचैन होते नहीं देखा, यह सब क्या है ? यह नई मरीजा कौन है ?

दादा

इंजिनियर श्री सतोशचन्द्र शर्मा की पत्नी और गोपाल की मां ।

नीरु

दादा, मैं सच्ची बात जानना चाहती हूं ।

दादा

वह एक मरीजा है और इलाज के लिए डा० अनीला के नर्सिंग होम में आई है, इसे तुम झूठी बात कैसे मानती हो। तुम्हें क्या अधिकार है कि तुम इससे अधिक जानने की कोशिश करो? जाओ मैं, कहता हूं जाओ अपने कमरे में (**जोर देकर**) मैं कहता हूं तुम अपने कमरे में चली जाओ, यहां से चली जाओ...

(**तेजी से डा० सईदा का प्रवेश**)

सईदा

ओह ! नीरु तुम फिर आ गई। तुम्हारी तबियत फिर खराब हो जाएगी।

दादा

यह उन लोगों में से है जो जिन्दगी भर बीमार रहते हैं।

सईदा

रहते नहीं, रहना चाहते हैं। चलो नीरु...

नीरु

(**जाते-जाते**) जो आप ही बीमार हैं उन्हें पागलों की तरह सारी दुनिया बीमार नज़र आती है। अच्छा, जाती हूं, पर दादा ! इससे बीमारी बढ़ेगी ही।

(**हँसती हुई जाती है।**)

दादा

क्यों डाक्टर ! क्या हाल है नई मरीजा का ?

सईदा

बहुत जल्द आपरेशन करना होगा ।

दादा

हालत क्या सचमुच बहुत खराब है ?

सईदा

जी, हां । आपरेशन न हुआ तो शायद काबू से बाहर हो जाय । अगर्चे एक्सरे में स्टोन नहीं आये हैं, फिर भी उनका ख्याल है कि गाल ब्लेडर में स्टोन है, अभी इन्ट्रा-वीनिस इन्जैक्शन देकर दुबारा एक्सरे कर रहे हैं । उससे शायद तसदीक हो जाय ।

दादा

कुछ और तो नहीं है ।

सईदा

उम्मेद तो नहीं है । मुझे केन्सर का शक था, पर अब नहीं है ।

दादा

हूं, तो अनीला ने क्या सोचा है ?

सईदा

वही तो जल्दी से जल्दी आपरेशन कर देना चाहती हैं लेकिन···

दादा

लेकिन...क्या बात है ? कहो न ।

सईदा

दीदी की तबियत इधर बहुत खराब होती जा रही है ।

दादा

हां सईदा, मरीज जितना ठोक होता जा रहा है, डाक्टर उतना ही गिर रहा है ।

सईदा

ऊपर से वह जितने जोर से हँसती हैं भीतर उतने ही जोर से उबलती हैं ।

दादा

यह तो भगवान की प्यारी दुनिया का नियम है, लेकिन खैर गनीमत यही है कि उसने आत्म-हत्या नहीं कर ली है ।

सईदा

शायद इसलिये कि वह हत्या करना चाहती है ।

दादा

(**चौंक कर**) क्या कहा ? (**सम्भल कर**) जान पड़ता है सईदा ! तुम्हारी आंखे काफी गहराई तक देख सकती हैं ।

सईदा

डाक्टर की आंखें होती ही इसलिये हैं लेकिन यह मरीजा कौन है ?

दादा

इन्जिनियर सतीशचन्द्र की पत्नी। गोपाल की मां, एक मरीजा जो इस नर्सिंग होम में ठीक होने के लिए आई है और ठीक होकर जाएगी।

सईदा

आपको यकीन है।

दादा

एक दिन देखोगी। तब तक कहता हूं कि घाव को कुरेदो नहीं, उस पर मरहम लगाओ।

सईदा

लेकिन जब तक घाव को कुरेदकर साफ़ न कर दिया जाय तब तक मरहम काम नहीं करता।

दादा

जानता हूं, पर वह काम मुझ पर छोड़ दो। तुम लोगों के साथ रहते-रहते इतना तो सीख ही गया हूँ।

सईदा

बहुत अच्छा। बहुत अच्छा, अब कुछ न पूछूंगी। **(तेजी से जाती है फिर मुड़ती है)** दादा! एनसथीसिया के लिये दीदी ने डाक्टर केशव को ही बुलाया है!

दादा

(चौंक कर) क्या? **(फिर एकदम सम्भल कर हँस पड़ते हैं)** अच्छा है, अच्छा ही है। आदम के आ जाने पर मैं घाव

कुरेदने के कड़वे काम से बच जाऊँगा। तुमने अच्छी खबर दी। बहुत अच्छी खबर।

(सईदा मुस्कराती हुई जाती है। दादा घमते हुए फुसफुसाते हैं।)

दादा

काश कि अनीला शादी कर ले। काश कि यह घटना...

(तभी तेजी से अनीला का प्रवेश। हाथ में एक पत्र है। वह दादा को नहीं देखती जो अब रसोईघर के द्वार से अन्दर जाने को है। सोफे पर गिरती पड़ती है।)

अनीला

ओह, ओह, किसी तरह, किसी तरह मैं इस भूचाल से बच सकती।

दादा

(मुड़ कर) भूचाल से बचना चाहती हो अनी। **(जोर से हँसता है)** है इतना साहस !

अनीला

ओह दादा ! आप अभी यहीं हैं ?

दादा

जल्दी ही जा रहा हूँ पर अनी, तुम इतनी बेचैन क्यों हो ?

अनीला

दादा ! मैं यह आपरेशन करना नहीं चाहती।

दादा

क्यों नहीं करना चाहती ?

अनीला

क्योंकि मुझे डर है कि मैं उसे मार डालूंगी ।

दादा

(**कठोर स्वर**) तुम उस डर को जीत नहीं सकती । पन्द्रह साल तक क्या तुम पानी पर लिखती रही हो ? क्या साधना के नाम पर तुमने बालू का महल खड़ाकिया है ?

अनीला

हां दादा, पन्द्रह साल तक मैं कच्चे घड़े में पानी भरती रही । जो कुछ मैंने सीखा वह सूखी जमीन पर तैरने के समान था । इसीलिये मेरे तप की आग मुझे ही भस्म कर रही है । यह पत्र तो पढ़ो...

(पत्र फेंक देती है । दादा उठा कर सहसा पढ़ जाते हैं ।)

दादा

(पढ़ते हुए)

आदरणीया ।

बहुत आशा लेकर लिख रहा हूं । डाक्टर से कुछ परदा नहीं होता । कहने को मैं एक बहुत बड़ा अफसर हूं पर वास्तव में एक अदना इन्सान हूँ, वह इन्सान जो अपने बीबी-बच्चों को प्यार करता है, बेइन्तहा प्यार करता है ।

मेरी बीवी आपके नर्सिंग होम में है, आपकी शरण में है। कैसी है, आप जानती हैं। मैं तो सिर्फ इतना जानता हूँ कि केवल आप ही उसे जिन्दा रख सकती हैं, आप ही हम सबको बचा सकती हैं। उसका बचना मेरा बचना है, मेरे बच्चों का बचना है।

आप पैसे की चिन्ता न करें। मेरा सब कुछ उस पर न्यौछावर है। वह बच गई तो मैं भीख मांग कर भी गुजारा कर लूंगा। आपने अब तक जो कुछ किया है उसने मुझे आशा से भर दिया है। मेरा बच्चा तो आपके गुण गाता रहता है। मुझे पूरा विश्वास है कि आपको सफलता मिलेगी। आप जैसों के सहारे ही भगवान की दुनिया चलती है।

आपका विनम्र,
सतीशचन्द्र शर्मा

(**पढ़कर दादा हर्ष से लगभग चीख उठते हैं**)

वाह वा शानदार, एकदम शानदार, यह तो तुम्हारी जीत है। ऐसी जीत जो किसी को मिली न मिलेगी...

अनीला

(**उसी तरह चीखकर**) लेकिन दादा, मैं ऐसी जीत नहीं चाहती। मैं पागल हो जाऊंगी मैं···

दादा

वह मैं सब कुछ जानता हूँ परन्तु···

अनीला

परन्तु मुझे उसे भूल जाना चाहिये ।

दादा

इन्सान कभी कुछ नहीं भूलता । मैं भूलने के लिए नहीं कहता ।

अनीला

फिर क्या करने के लिए कहते हो ।

दादा

बदला लेने के लिए ।

अनीला

क्या ! क्या मैं बदला लूँ ? मैं उसे मार डालूँ । उसकी हत्या कर दूं ।

दादा

मारना ! हत्या करना !! आज की दुनिया की तरह तुम भी यही सोचती हो कि बदला लेने का केवल एक ही रास्ता है—हत्या करना । लेकिन मैं कहता हूं कि हत्या करना बदला लेना नहीं है, हर्गिज नहीं है ।

अनीला

तो क्या जिन्दगी देना बदला लेना है...

दादा

क्या तुम समझती हो कि तुम जिन्दगी दे सकती हो ?

अनीला

ओह, तो क्या करने को कहते हो ।

दादा

अपना काम। तुम डाक्टर हो और तुम्हारा काम है आपरेशन करना।

अनीला

वह मैं नहीं करूँगी। कभी नहीं करूँगी। मैं उसे मार डालूँगी। मैं उसे मार डालूँगी।

दादा

यानी तुम आत्महत्या करोगी।

अनीला

आप इसे किसी नाम से पुकार सकते हैं। हत्या, हत्या रहेगी।

दादा

अनीला ! तुम बीमार हो...

अनीला

मैं बीमार नहीं हूं।

दादा

(दृढ़) तुम बीमार हो।

अनीला

नहीं, नहीं।

दादा

आदमी शब्दों की भाषा जानता है, उसके पीछे सचाई को छिपा सकता है लेकिन आंखों की भाषा में झूठ के लिए

कोई जगह नहीं है। इस समय तुम्हारी हालत ऐसी है कि तुम मेरी पिस्तौल लेकर मरीजा को, उसके बेटे को, उसके पति को, मुझे और अपने आपको, सबको मार सकती हो।

अनीला

दादा, आप ऐसा कैसे कह सकते हैं। आप इतने कठोर कैसे हो सकते हैं।

दादा

डाक्टर होकर ऐसा प्रश्न पूछती हो। कठोर हुए बिना क्या घाव कुरेदा जा सकता है।(पास आकर) पर मैं एक बात नहीं समझ पाया।

अनीला

क्या ?

दादा

यही कि इस आकाश के नीचे सबके रहने के लिए जगह है, लेकिन फिर भी न जाने क्यों हम अपनी जगह छिन जाने के डर से मरने-मारने को तैयार रहते हैं।

अनीला

मुझे क्या पता क्यों तैयार रहते हैं ? क्यों ऐसा होता है ?

दादा

क्योंकि हम कायर हैं। तुम भी कायर हो।

अनीला

मैं कायर हूँ···

दादा

(**तेज स्वर**) हाँ, तुम कायर हो ! तुम भूल गईं कि तुम डाक्टर हो । तुम भूल गई कि डाक्टर एक सिपाही है । तुम भूल गई कि सिपाही का एक ही काम होता है—जय पाना । (**पास आकर**) मुझे देखो । मैं मानता हूँ कि हथियारों का इस्तेमाल आत्महत्या है परन्तु युद्ध-भूमि में इनका इस्तेमाल करके मैंने कितने ही पदक पाये हैं। (**घूमता हुआ**) वहां मैं भूल जाता था कि मैं आत्महत्या कर रहा हूं। वहाँ मुझे एक ही बात याद रहती थी कि मैं सिपाही हूं और मेरा काम है—जय पाना ।

अनीला

हो सकता है। लेकिन दादा ! आप यह क्यों भूल जाते हैं कि मैं डाक्टर होने से पहले एक इन्सान हूँ ।

दादा

इन्सान डाक्टर से भी बड़ा है । वह सबसे बड़ा है ।

(**लीला का प्रवेश**)

लीला

डाक्टर ! मिस्टर शर्मा आपसे मिलना चाहते हैं ।

अनीला

कौन शर्मा ?

दादा

(एकदम) कौन मिलना चाहता है ?

लीला

वही नई मरीजा के शौहर इन्जीनियर साहब ।

दादा

उनसे कह दो कि डा० सईदा से मिले ।

लीला

कहा था...

दादा

कहा था तो उसे मानना पड़ेगा । डा० अनीला बीमार हैं ।

लीला

लेकिन वह उन्हीं से मिलने आये हैं । आज ही उन्हें वापिस लौटना है ।

दादा

तुम उनकी वकील हो या नर्सिंग होम की नर्स ।

लीला

जी अच्छा । अच्छा, मैं कह दूंगी । (जाती है)

दादा

(मुड़कर) अच्छा अनीला ! मैं भी चला, लेकिन याद रखना तुम कायर नहीं हो सकती ।

अनीला

मैं कायर नहीं हूं। होती तो क्या आज डाक्टर बनने को जीवित रहती।

दादा

(मुस्कराकर पास आते हुए) अनीला! डाक्टर तुम केवल इसलिये नहीं बनी कि तुम बहादुर थीं।

अनीला

तो और किस लिये ?

दादा

वह तुम जानती हो।

अनीला

(कांप कर) दादा !!

दादा

घबराओ नहीं। तुमने डा० केशव को बुला भेजा है। उससे बढ़कर कुशल एनसथैटिस्ट और कोई नहीं है। मैं अब जल्दी नर्सिंग होम में नहीं आऊंगा।

(कह कर तेजी से बाहर जाते हैं, अनीला तेजी से उठती है, पीछे जाती है।)

अनीला

दादा, दादा, सुनो तो (बाहर जाने को होती है पर लौट आती है। सोफे पर लुढ़क जाती है। दो क्षण वैसे ही पड़ी रहती है। फिर फुसफुसा उठती है।) केशव ! डाक्टर केशव ! दादा सब

कुछ जानते हैं। यह कैसी विचित्र बात है कि कुछ बातें मैं दादा से साफ-साफ नहीं कह सकती पर डा० केशव से कह देती हूं। कुछ भी नहीं छिपा पाती। दादा अपने हैं पर केशव तो जैसे...

(काकी का प्रवेश)

काकी

तुम जानो बड़ी मुस्किल से रोका है।

अनीला

किसे रोका है काकी ?

काकी

अरे उसी शर्माजी को। तुम जानो अन्दर ना भाग्गें आवे थे। लीला ने जिब कहा कि डाक्टर को बुखार आ गया है तुम जानो तब कहीं गये।

अनीला

गये।

काकी

हां, अगले अफ्ते आन कूं कह गये हैं। तुम जानो, मका क्यूं बेटी। तबियत क्या सच्चो ही खराब है।

अनीला

(कांप कर) हां, हां, काकी। पेट में बहोत तेज दर्द है। जरा पानी गरम करो न, सेकूंगी। चलो, मैं अभी आई।

काकी

(**जाती-जाती**) हां, हां, आ न। तुम जानो सिर सहलाये भी कई दिन हो गये। जरा और सा जी होगा। और दिके वह छोरा आया तो उठके चल न देना। मकां तुम जानो हाँ...

अनीला

ना, ना, में बस आ रही हूं। तुम चलो।

(काकी जाती है कि लीला आती है।)

लीला

डाक्टर, मिस्टर शर्मा गये।

अनीला

हाँ, मैंने सुन लिया। तुमने ठीक किया। शाबाश...

(लीला खड़ी रहती है)

कुछ कहना है ?

लीला

नहीं तो...वैसे ही...

अनीला

कहो, कहो, क्या कहना है ?

लीला

(**एक दम**) माफ करिये, मैं एक नर्स हूं पर आपके प्यार के भरोसे हिम्मत कर रही हूं।

अनीला

किस बात की ?

लीला

आपसे एक बात कहने की ।

अनीला

बोलो, तुम्हें क्या चाहिए ।

लीला

(एक दम) डाक्टर ! आपकी तबियत बड़ी खराब है । आप वह आपरेशन न करें ।

अनीला

(कांप कर) क्या...क्या कहा ?

लीला

कम से कम कुछ दिन रुक जायें या फिर किसी दूसरे डाक्टर को बुलवा लें ।

अनीला

(सम्भल जाती है, मुस्कराती है) लीला ।

लीला

जी हाँ ।

अनीला

तुम मुझे प्यार करती हो न ।

लीला

आपको कौन प्यार नहीं करता ।

अनील।

मुझे तुम्हारे प्यार का भरोसा है । जाओ, परसों वह आपरेशन होगा और तुम मेरे साथ रहोगी ।

नीला

दीदी !

अनीला

न, न, करुणा नहीं। करुणा डाक्टर की दुश्मन है और फिर तुम तो सदा हँसने वाली हो। सोचने लगोगी तो यह धूप जैसी हँसी मुरझा जायगी। जाओ प्यारी लीला, मरीजा का ध्यान रखो। और हाँ, दूसरे लोगों को उस बात का पता नहीं होना चाहिये।

लीला

अच्छा दीदी। अच्छा...

(जाती है। अनीला उठती है)

अनीला

सभी मुझसे सहानुभूति दिखाने लगे। सभी...ऊंह...

(रामू का प्रवेश। दोनों हाथों में डलिया थामे है।)

रामू

दीदी ?

अनीला

क्या है रे।

रामू

जी वह शर्मा साहेब हैं न। अपनकू पकड़ कर बोला कि ये डलियां डाक्टर साहब को देंगा।

अनीला

क्यों देगा, समझा नहीं।

रामू

शर्मा साहेब कलकत्ता से लाया है। एक में रसगोल्ला के डिब्बे हैं, दूसरे में केला, सन्तरा, अनानास के...

अनीला

(**एकदम भड़क उठती है**) ये सब चीजें तुम यहां क्यों लाये। कैसे हिम्मत हुई तुम्हारी; क्या तुम नहीं जानते...

रामू

जी अपनकूं सब पता। अपनने बोल दिया था पर अब तो यहां सब उलट-पलट हो गिया है। फिर गोपाल बाबा बोला...

अनीला

बहस किये जाता है बेवकूफ। मैं कहती हूं ले जाओ सब। ले जाओ मेरे सामने से...

रामू

अभी ले जाता डाक्टर साहब। अभी ... गलती हो गया। माफी देंगा। अपनने सोचा दीदी गोपाल बाबाकू इतना प्यार देता इसीलिये...

अनीला

फिर वही बकवास किये जा रहा है। कल को कोई रुपया-पैसा देगा, कुछ और देगा, तो तू ले आयगा? तुझे शर्म नहीं आई। मैं कहती हूँ तू जाता क्यों नहीं। निकल यहां से और खबरदार जो फिर यहां देखा। गोपाल... गोपाल...

रामू

दोहाई दीदी । जायगां, अभी जायगां ।

(रामू कांपता हुआ भागता है । उतनी ही तेजी से लीला आती है ।)

लीला

डाक्टर ! आपका तार ।

अनीला

किसका तार ?

लीला

डा० केशव का । शशि...

अनीला

(एकदम) शशि...शशि को क्या हुआ ? **(तेजी से तार पढ़ती है)** पैर फिसल जाने के कारण शशि गिर पड़ी । दाहिने पैर की हड्डी टूट गई । प्लास्टर हो गया है । चिन्ता की कोई बात नहीं । मैं आ रहा हूं । **(बैठकर)** हड्डी टूट गई । ओह...

(तेजी से काकी, नीरु, सईदा का घबराये हुए प्रवेश)

सईदा

क्या हुआ दीदी ?

नीरु

शशि कैसे गिरी । कैसे ?

काकी

क्या हुआ शशि को, बेट्टी ! तुम जानो क्या हुआ, बता तो ।

अनीला

(एकदम स्वस्थ होकर) कुछ नहीं। गिर जाने के कारण शशि के दाहिने पैर की हड्डी टूट गई है । प्लास्टर हो गया है । कुछ दिन में ठीक हो जायगी ।

सईदा

तार किसका है ?

अनीला

डाक्टर केशव का ।

नीरु

दीदी, आपको जाना चाहिये

लीला

हां, आप चली जायं ।

काकी

हां, हां, जा बेट्टी । तुम जानो हो सके तो यहीं ले आ ।

सईदा

लाना तो शायद ठीक न रहेगा पर आप जायं जरूर...

अनीला

(एकदम दृढ़ स्वर) जाने की ज़रूरत नहीं है। सईदा! मैं कल ही आपरेशन कर देना चाहती हूं।

सईदा

पर डाक्टर...

अनीला

ठीक है सईदा... (जाते हुए मुड़ती है) और हां, उन लोगों से कह दो कि गोपाल को अब यहां न रखें। (काकी से) आओ काकी। मैं कुछ देर लेटूंगी। (जाती है)

लीला

डाक्टर दीदी बड़ी विचित्र हैं...

नीरु

कुछ आदमी बड़े जटिल होते हैं मिस जोसेफ! कोई कमी होती है जो उन्हें वज्र जैसा कठोर और सोमेंट जैसा मजबूत बना देती है।

सईदा

कुछ क्या, अक्सर इन्सान ऐसे ही होते हैं। किसी कमी के कारण वे बड़े-बड़े काम कर जाते हैं।

(जाती है)

नीरु

क्या कहा ? अक्सर ऐसे ही होते हैं। सच होते तो हैं। सच तुम तो मुझसे भी ज्यादा जानती हो। (जाती है) ठहरो डाक्टर, ठहरो, तुम तो ज्ञानी हो...

लीला

(ज़ोर से हँसती है) ज्ञान, ज्ञान, कोरे ज्ञान के मारे आदमी पागल हो रहा है। (जाती है)

(परदा)

दृश्य दूसरा

(दूसरे दिन बहुत सबेरे)

(पहले दृश्य वाला स्थान, वही रूप-रंग। समय रात के अन्तिम पहर का है। चारों ओर पूर्ण निस्तब्धता है। परदा जब उठता है तो वहां पूर्ण अन्धकार दिखाई देता है। सब कुछ अन्धकार में छिपा हुआ है। फिर धीरे-धीरे अन्धकार धुँधलाता है। कुरसी गिरने की आहट होती है। फिर सहसा बिजली जल उठती है। मंच पर हाथ में एक मोटी-सी पुस्तक लिए हुए डा० अनीला दिखाई देती है। बेहद थकी हुई, त्रस्त जैसा अपना ही भूत हो, जैसे गहरी नींद में जाग उठी हो। आकर सोफे पर बैठ जाती है। कई क्षण हाथों में सिर पकड़े बैठी रहती है। फिर अपने आप से बोल उठती है।)

अनीला

आखिर आपरेशन करना ही होगा, पर मैं वह आपरेशन नहीं करूँगी। नहीं करूँगी।...लेकिन सब इन्तजाम हो चुका है। सबको मालूम है कि आज आपरेशन होना है। क्या कहेंगे ?...कुछ भी कहें मैं आपरेशन नहीं करूँगी...लेकिन...(**एकदम गिर जाती है**) ओह मैं क्या करूँ... मैं क्या करूँ...

(**सहसा एक आवाज[1] गूंजती।**)

आवाज

करती क्या, भाग जाओ।

(**अनीला कांप कर उठती है, चारों ओर देखती है।**)

अनीला

कौन ! कौन है ! कौन बोलता है ?

(**दूर पहरुए की आवाज गूंजती है।**)

पहरुआ

खबरदार होशियार, पांच बज गये हैं। खबरदार होशियार...

(**अनीला एकदम चौंकती है**)

---

१. यदि मंच पर आवाज का होना उचित व सम्भव न हो तो डा० अनीला का अन्तर्द्वन्द्व अभिनय द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। अगर्चे यह योजना पुरानी हो गई है फिर भी अन्तर्द्वन्द्व की सघनता के लिए इसका उपयोग हो ही सकता है।

अनीला

ओह पहरुआ था। मैंने समझा...

(बैठ जाती है। आवाज फिर गूंजती है)

आवाज

तुमने खाक समझा। यह पहरुए की आवाज नहीं है।

अनीला

तो किसकी है ?

आवाज

अपने अन्दर झांको, अपने को टटोलो, तुम्हें पता लगेगा कि यह आवाज तुम्हारी है।

(अनीला फिर कांपती है)

अनीला

मेरी आवाज। यह मेरी आवाज है, यानी मैं बोली थी। मैं भाग जाना चाहती हूं। मैं...मैं...(एकदम तेज होकर) क्या वाहियात बात है। डाक्टर होकर मैं इतनी कायर होती जा रही हूं। नहीं, नहीं, मैं कायर नहीं हूं, मुझे वह आपरेशन करना है। अवश्य करना है। कोई बात है।

(तेजी से उठकर पुस्तकों की आलमारी के पास आती है, एक पुस्तक निकालकर लाती है। मेज पर बैठकर बड़े ध्यान से पढ़ती है। दो क्षण के लिए उसमें डूब जाती है। तभी रामू आता है, हाथ में बुहारी और झाड़न है। उसे देखकर अनीला पुकारती है।)

अनीला

रामू, इधर आओ।

रामू

(**पास आकर**) अपनकू बोला, दीदी।

अनीला

हां, कल वे चीजें वापिस दे आये थे।

रामू

जी देगां क्यों नहीं, पण...

अनीला

पण क्या ?

रामू

पण आधा देगां और आधा...

अनीला

आधा ?

रामू

आधा अपनके पेट में खलास हो गया।

अनीला

क्या आधी चीजें तुम खा गये ?

रामू

हां दीदी, अपनने सोचा कि दीदी गुस्सा में है। गोपाल बाबा पूछेंगा तो क्या कहेंगा। हम जब लौटाने कूं

गया तो बाबा ने पूछा—डाक्टर दीदी ने नहीं लिया। हमने बोला—लिया वयूं नही। खूब मजे से खाया।

अनीला

क्या! क्या बोलता है रे?

रामू

सच बोलता दीदी। बीमारी की कसम सच बोलता। हमने कभी झूठ बोला? बोलता तो बीमार न हो जाता। गोपाल के डर से हमने आधी चीजें लौटाया, आधी को बोला आपने खाया।

अनीला

(क्रोध में चीखकर) क्या, क्या मैंने खाया?

रामू

दोहाई दीदी, दोहाई दीदी की। सारी लौटाता तो गोपाल बाबा कू दुख होता। वह आपकू परेशान करता। आपकू परेशानी से बचाने कू ··

अनीला

(चीखकर) रामू···(एकदम शांत) ओह रामू···तू भी मुझ पर···रामू, तू भी मुझ पर···(फिर सहसा खो जाती है।)

रामू

अपनको यही सूझा। इससे गोपाल बाबा भी खुश हुआ और आपकी बात भी रह गया। सब मुसीबत अपनके पेट को हुई। पण मुसीबत भी क्या?

खाली था भर गया। दीदी आप तो गोपाल बाबा कूं खूब प्यार करता। हर बाबा को प्यार करता। इसीलिए अपनने दीदी···(देखकर) दीदी···दीदी···

अनीला

(एकदम जाग कर) रामू, एक काम करेगा।

रामू

क्यों नहीं करेंगा। एक नहीं, एक हजार करेंगा। आपके लिये···

अनीला

जल्दी जाकर एक टैक्सी ले आ।

रामू

जी, अभी।

अनीला

हां, अभी।

(जाता है, दरवाजे पर पहुंचते ही अनीला पुकारती है।)

अनीला

अच्छा, अच्छा, अभी रुको। देखो...

रामू

जी।

अनीला

नहीं, जाओ, जल्दी लेकर आना।

(वह मुड़ता है, फिर पुकारती है)

अनीला

रामू !

रामू

(पास आकर) जी ।

अनीला

कुछ नहीं, कुछ नहीं, जाओ । हां, यह देखो । आकर यह तार दे देना। लिख कर रख जाऊंगी । (रामू ठिठकता है) जाओ बाबा, मुंह क्या देखते हो । जल्दी जाओ ।

(रामू जाता है । अनीला बैठ कर तेजी से तार लिखती है, पढ़ती है ।)

"सन्ध्या तक पहुंच रही हूं ।" ठीक है, हवाई जहाज से जाऊंगी (फिर सोच में पड़ जाती है) ठीक है न । मैंने ठीक किया न । मुझे जाना ही चाहिए । रह गई तो मुझे विश्वास है कि मैं उसे मार डालूंगी । जरूर मार डालूंगी । मुझे इस हत्या से अपने को बचाना ही चाहिए । अब तो अच्छा बहाना है । शशि के चोट लगी है । मैं हत्या नहीं करना चाहती । मैं चली जाऊँगी । डा० केशव आ ही रहे हैं । सईदा आपरेशन कर देगी और...

(बोलते-बोलते तेजी से अन्दर जाती है । दो क्षण में कुछ सामान लेकर आती है और बाहर भागी चली जाती है । एक क्षण बाद टैक्सी का हार्न सुनाई देता है । फिर रामू अन्दर आता है ।)

रामू

कहां है तार ? (तार उठाता है) अपन दीदी कूं समझ नहीं पाता। एकदम बदल गया। हमने समझा हमकूं मार पड़ेगा पर दीदी बोला भी नहीं। है न, बदल गया है न। अच्छा तार दे जाऊं पर पहले जरा झाड़ - बुहार तो लूं।

(झाड़ना शुरू करता है। तभी नीरु आती है।)

नीरु

ओह रामू ! दीदी कहां है ?

रामू

अपनकूं कुछ मालूम नहीं।

नीरु

मालूम नहीं (हँसती है) तू भी बदल गया है रे। क्या बात है ?

रामू

आपकूं क्या दरकार है। अपने कमरे में जाओ। हम जो चाहेंगा करेंगा। जाओ यहां से, जाओ बाबा। नहीं तो ...

नीरु

तूफान, तूफान आने वाला है।

रामू

चुप रह। तू खुद तूफान है, कयामत है, भूचाल है...

(लीला का प्रवेश)

लीला

डाक्टर दीदी ! डाक्टर दीदी !

नीरु

दीदी यहां नहीं है ।

लीला

कहां है ? कहां गई रामू ?

रामू

अपनकू कुछ मालूम नहीं हैंगा ।

लीला

मालूम नहीं है । उधर मरीजा को फिर बड़ा तेज दौरा पड़ा है । (**तेजी से जाती है**) आये तो कह देना ।

नीरु

(**हँसती है**) रामू ! सच बोलना रे । तेरे को कुछ पता नहीं ।

रामू

(**चीख कर**) नहीं, नहीं, नहीं, हजार बार नहीं ।

नीरु

तीन हजार बार बोला, तब ठीक है । तुझे पता है । (**जाती है**) कोई डर नहीं, कोई डर नहीं ।

रामू

अपनकू भाग जाना चाहिए । इस नर्सिंग होम में सब बीमार हो गया । मौत को सुई लगा-लगा कर जिन्दा

करता रहता है, तभी इस नीरु के माफिक लाश घूमता है। हमेशा बोलना, बोलना। तुम्हें पता है, है पता, करेगां कुछ, फांसी देगा। दे, हम चढ़ कर उतरेगा ही नहीं। चाहे जान भले ही निकल जाये।

(तेजी से डाक्टर सईदा का प्रवेश)

सईदा

क्यों रामू ! दीदी कहां गई ?

रामू

अपनी बेटी के पास।

सईदा

क्या ? दीदी शशि के पास गई, बिना कुछ कहे।

रामू

हमकू बोल गया कि आप से कह दे।

सईदा

क्या ?

रामू

कि हम आपरेशन नहीं करेगा।

सईदा

तो कौन करेगा ?

रामू

आप और डा० केशव।

सईदा

डा० केशव । (क्षणिक अवकाश, चेहरा चमक उठता है) यह तो अच्छा हुआ, बहुत अच्छा । (बैठती है) ... वह कब गईं ?

रामू

अभी सवेरे ।

सईदा

इतने सवेरे । अभी तो कोई गाड़ी नहीं जाती ।

रामू

हवाई जहाज से जाएंगी, ऐसा हमको बोला था ।

सईदा

और कुछ बोला ।

रामू

बोला डा० सईदा सब कुछ जानता है । हम अब दो हफ्ते नहीं आयगा ।

सईदा

दो हफ्ते ।

रामू

जी हाँ ।

(सईदा सोफे पर बैठ कर एक क्षण शून्य में ताकती है, फिर बोल उठती है ।)

सईदा

तो आखिर दीदी चली ही गई । अच्छा हुआ, बहुत

अच्छा हुआ जो चली गई। उन्हें बहुत पहले चले जाना चाहिये था...

(नीरु का बोलते-बोलते प्रवेश)

नीरु

मैं कहती हूँ दीदी लौट आयँगी। जरूर लौट आयँगी।

सईदा

ओह नीरु, नीरु तुम हमेशा आर्य-शांय बकती रहती हो। जाओ यहां से।

नीरु

मैं गई तो फिर लौट कर नहीं आऊंगी।

सईदा

तो कोई आस्मान नहीं गिर पड़ेगा। क्या मुसीबत है, टिड्डा अपनी टांगें इसीलिये ऊपर किये रहता है कि आसमान गिरे तो अपनी टांगों पर रोक लेगा। जाओ, मैं कहती हूं, जाओ।

नीरु

जाती हूँ डाक्टर, जाती हूँ, इतना शोर मत मचाओ। टिड्डा आसमान को रोके या न रोके पर रोकने का रास्ता

तो दिखाता ही है। मैं कहती हूँ कुछ नहीं होगा, कुछ नहीं होगा।

(उसी समय डाक्टर केशव का प्रवेश। सुन्दर स्वस्थ; आयु ४३-४४, पर लगते हैं ३०-३२ के लगभग। मुख पर दृढ़ता, आंखों में स्नेह, मुस्काते आते हैं, नीरु से टकरा जाते हैं।)

केशव

हैलो नीरु ! तुम अभी तक यहीं हो।

नीरु

ओ हो, हो, डाक्टर साहब, नमस्ते। जी हां, मैं तो हूँ पर वैसे मरीज बहुत कम रह गये हैं।

केशव

सो तो देख रहा हूं सब डाक्टर बन गये हैं। डा० अनीला के पत्र से पता लगा कि वह बेहद बीमार है। और डा० सईदा पीली पड़ गई है।

(सईदा तब तक उठकर पास आती है।)

सईदा

आदाब अर्ज, डाक्टर केशव।

केशव

आदाब अर्ज, मैंने कहा क्या बात है ? (**रामू से**) रामू ! मेरा सामान तो देखो। (**रामू जाता है। केशव बैठ जाते हैं।**) हाँ, सुना है कि कोई नई मरीजा आई है।

सईदा

मरीजा क्या है मौत की छाया है। नर्सिंग होम में सीलन छा गई है।

केशव

क्यों ? आखिर वह मरीजा है कौन ?

सईदा

हम तो इतना ही जानते हैं कि वह आसाम से आये हुए, अब पूना में लगे हुए, झांसी निवासी इन्जीनियर सतीशचन्द्र शर्मा की पत्नी है। बाकी जानती हैं डा० अनीला।

केशव

अनीला कहाँ है ?

सईदा

अभी सदेरे हवाई जहाज से शशि के पास चली गई।

केशव

क्या ! मुझे तो यहाँ बुलाया। उस मरीजा का आपरेशन होने वाला है।

सईदा

जी हाँ, सब तैयारी है, पर वह कह गई हैं कि वह आपरेशन अब आपकी मदद से मैं ही करूं।

केशव

पर क्यों ! क्या हुआ ? बात क्या है ?

सईदा

बात ही तो कोई नहीं जानता ।

नीरु

मैं जानती हूँ ।

केशव

क्या ?

नीरु

नई मरीजा दोदी की कोई...(हँस पड़ती है) नहीं तो कोई इतने प्यार से सेवा करता है ।

केशव

लेकिन जो प्यार करता है वह ऐन वक्त पर इस तरह भाग नहीं जाता है ।

नीरु

भागा प्यार में ही जाता है, डाक्टर । अपने हाथों बुरा न हो जाय यही डर उसे खा जाता है ।

केशव

शायद ! क्यों डा० सईदा आप कुछ जानती हैं ।

सईदा

जानती नहीं, जानना चाहती हूं । आप शायद जानते हों ।

केशव

मैं...मैं तो इतना ही जानता हूँ कि डा० अनीला ने मुझे बुलाया था लेकिन यह नहीं कहा था कि वह चली

जाएंगी। (हाथ हिला कर) बहरहाल, चिन्ता की कोई बात नहीं, मैं मरीजा को देखना चाहूँगा।

सईदा

अभी।

केशव

शुभस्य शीघ्रं। नेक काम में देरी क्यों ?

(सईदा हँस पड़ती है)

सईदा

आप तो डाक्टर बस...

केशव

मैंने कुछ गलत कहा ? और गलत भी हो तो बुरा नहीं है, आप हँसी तो सहीं। सच्ची बात पर आदमी कभी नहीं हँसता।

सईदा

डाक्टरी पेशे वालों को तो हमेशा ही हँसना-मुस्काना पड़ता है, डाक्टर। वह उनकी दूकान का ट्रेडमार्क जो है।

केशव

ट्रेडमार्क (हँसता है) आपने कहा खूब। अन्दर बेशक क्रोध का तूफान उठता हो, दर्द तिलमिलाता हो, आंसुओं की बाढ़ आ रही हो पर, डाक्टर को मुस्कराना ही चाहिए। काश कि अनीला इस बात को समझ पाती।

(सहसा अनीला का प्रवेश)

अनीला

समझती है। अनीला भी इस बात को समझती है।

(सब सहसा कांपते हैं)

नीरु

दीदी आ गई, दीदी आ गई।

(तेजी से जाती है)

केशव

(चकित) अनीला तुम! तुम तो चली गई थीं।

सईदा

(कांप कर) आप, आप गई नहीं थीं। रामू कहता था...

अनीला

रामू ने ठीक कहा। मैं जाना तो चाहती थी पर फिर सोचा **(बैठ जाती है)** आपरेशन करके ही जाऊंगी।

केशव

(गुनगुनाता है) "पंखों में क्यों बांध दिये पत्थर।" देखा नीरु **(देखकर)** कहां है नीरु, भाग गई। बहरहाल, प्यार भगाता नहीं, वापिस खींच लाता है। चुम्बक है।

(मुस्कराता है, अनीला भी मुस्कराती है)

सईदा

आपकी तबियत तो ठीक है।

अनीला

मैं बिल्कुल ठीक हूं। तुम चिन्ता मत करो। आपरेशन की तैयारी करो। मैं अभी मरीजा को देखने आती हूं।

(अन्दर जाती है)

सईदा

बहुत अच्छा, डाक्टर।

(रामू का सामान लिये प्रवेश)

रामू

अपन चला जायगा। अब नहीं रहेंगा।

केशव

क्या हुआ रामू ?

रामू

होने कू क्या बचा। सामान उतारो, सामान चढ़ाओ, जायंगा, नहीं जायंगा, आपरेशन करेगा, आपरेशन नहीं करेगा, नहीं नहीं, आपरेशन करेगा। टैक्सी ड्राइवर बोलता-तुम्हारी डाक्टर बहोत बीमार है, बहोत बीमार।

सईदा

कैसे रे ?

रामू

कहता था सारे रास्ता भर बोलता रहा—रुको, चलो, चलो रुको, लौटो, चलता क्यूं नहीं, हम आपरेशन नहीं करेगा, नहीं करेगा, नहीं-नहीं, करेगा—करेगा। हमको

लगता डाक्टर कि दीदी के दिमाग का आपरेशन होना मांगता।

केशव

डा० अनीला हवाई अड्डा पर गया।

रामू

हमकूं टैक्सी ड्राइवर बोलता—तुम्हारा डाक्टर पागल हो जायगा। हवाई अड्डे पर पहुंच कर अन्दर गया। वहां के बाबू ने पूछा—आप जायगा तो बोला, नई भाई, हमकूं नहीं जाना। डा० केशव को आना था, आया। बाबू बोला-डाक्टर अभी कैसे आने सकता, अभी तो कोई जहाज नहीं आता, एक घण्टे बाद आयंगा।

सईदा

फिर।

रामू

ड्राइवर कहता—फिर दीदी लौट आया। बोला, हम वापिस जायंगा। और फिर रास्ते में बोलता आया, हम आपरेशन करेगा, जरूर करेगा, जरूर मार डालेगा, जरूर बदला लेगा।

केशव

हूं। रोग काफी गहरा है।

सईदा

नर्सिंग होम में लोग कानाफूसी करने लगे हैं। बात कब तक छिपी रह सकती है।

केशव

कोई चिन्ता नहीं, कोई चिन्ता नहीं। आप तैयारी करें! आदमी कभी-कभी अपने ही से हार जाता है और तिल का ताड़ बना लेता है। कल्पना का भूत जैसे उसकी आंतों में घुस जाता है।

रामू

भूत आंतों में, बाप रे। अपन तो डाक्टर अब यहां नहीं रहेगा। नमस्ते।

(तेजी से बाहर जाता है।)

सईदा

(हंसती हुई) अच्छा डाक्टर, मैं भी चली। आप जल्दी आइयेगा। (कुछ रुककर) और हां...

केशव

बोलो।

सईदा

अब तो आप आ ही गये हैं। अच्छा हो कि डा० अनीला यह आपरेशन न करे।

केशव

हूं...देखूंगा। अच्छा...

सईदा

धन्यवाद।

(जाती है, तभी अनीला आती है।)

केशव

हलो अनीला !

अनीला

हलो केशव !

केशव

नहीं जानता था कि तुम इतनी दुर्बल हो सकती हो।

अनीला

मैं भी नहीं जानती थी। पन्द्रह साल तक अकेली जूझती रही।

केशव

यहीं तुम भूलती हो। तुम अकेली कभी नहीं थीं।

अनीला

जानती हूं, दादा थे...

केशव

नहीं अनीला! बेशक दादा तुम्हारे सहायक थे, तुम्हारी शक्ति थे, पर उनसे भी बढ़कर एक और बात थी जिसने तुम्हें बल दिया।

अनीला

(चकित) एक और बात थी ?

केशव

हां अनीला।

अनीला

वह क्या ?

केशव

चुनौती !

अनीला

(ठगी-सी) क्या ! क्या कहा ?

केशव

(दृढ़ता से) क्यों, गलत है ?

अनीला

(उसी तरह) मुझे किसने चुनौती दी, किसने ?

केशव

यह भी बताना होगा ।

अनीला

(बैठकर) मैं···मैं चुनौती के कारण यह सब कुछ कर सकी । चुनौती के कारण मैंने इतने कष्ट उठाकर, इतनी वेदनाएं सहकर, इस नर्सिंग होम का निर्माण किया, आज का दिन देखा ।

केशव

आज का दिन ही तो इस सचाई को प्रकट कर सका है । यह जो नर्सिंग होम में ठण्डा तूफ़ान आया है, यह जो तुम्हारी आत्मा कचोट रही है, यह सब इसी कारण है ।

अनीला

(टूटी हुई-सी) काश कि तुम सत्य को जानते, काश कि तुम मेरे दर्द को पहचानते ।

केशव

पहचानता हूँ अनी, पांच वर्ष से तुम्हें पहचान रहा हूँ। तुम तिल-तिल कर जलती हो, तुम्हारे हृदय में टीसें उठती हैं, तुम्हारी छाती आहों से छलनी हो रही है। और इस सत्य को छिपाने के लिए तुम अनथक प्रयत्न करती हो।

अनीला

(**कांपकर**) ओह, ओह !!

केशव

(**वही दृढ़ स्वर**) अन्दर जितनी गहरी पीड़ा होती है। ऊपर तुम उतनी ही करुण बनती हो, उतनी ही हँसती हो। लेकिन तुम्हारी करुणा, तुम्हारी मुस्कान, तुम्हारा हास्य, इन सबका आधार है वही चुनौती। उसी चुनौती ने आज तुम्हें कायर बना दिया। क्योंकि तुम्हारे भीतर बदला लेने की भावना जाग उठी है (**अनीला कांपती है**)... लेकिन जब तक इसका रूपान्तर नहीं होगा...

अनीला

(**कांपकर एकदम**) बस, बस केशव इतने निर्दयी न बना। मैं कायर हूं क्या ? क्या मैं सचमुच कायर हूं ?

केशव

(**दोनों हाथ हिलाकर**) भागने वाले कायर के सिवा और कुछ हो ही नहीं सकते।

अनीला

ओह केशव ! केशव !! मुझे जाने दो ! मुझे यहां से

भाग जाने दो। मैं उसे मार डालूँगी। मैं उसकी हत्या कर दूंगी। सच कहती हूँ मैं मेरे अन्दर कोई घुसा बैठा है जो मुझसे उसकी हत्या करवा देगा।

केशव

इसी को कहते हैं बदले की भावना जो चुनौती के कारण पैदा हुई है।

अनीला

(**एकदम पिघलकर पास जाती है**) केशव, तुम मेरी सहायता करो। मुझे शक्ति दो।

केशव

(**दृढ़**) मेरी सहायता चाहती हो ?

अनीला

(**पूर्वतः**) हां केशव, तुम्हारी सहायता चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि...

केशव

(**एकदम पास आकर**) न जाने कब से कह रहा हूं पर तुम हो कि...

अनीला

क्या...क्या मतलब ?

केशव

(**मुस्कराता है**) मतलब भी बताना होगा। नहीं अनी, उसे कह न सकूंगा (**प्यार से**) अनी...

अनीला

(**चौंककर**) केशव ! वह...वह बात नहीं...

केशव

वही बात तो है...

अनीला

(**मौन रहती है, फिर फुसफुसाती है**) वह बात, अब ! इस आयु में ! नहीं, नहीं केशव ! क्या कहेंगे सब !

केशव

यही तो कायरता है। सबकी चिन्ता मत करो। अपने को देखो। सबको प्रसन्न करने के लिए अपने को धोखा देना दम्भ है और दम्भ से बड़ा कोई पाप होता है, यह मैं नहीं जानता।

अनीला

तो...तो...

केशव

(**आंखों में झांककर**) तो क्या ! तुमने आज तक अपने प्रेम की पीड़ा को नहीं समझा। तुम समझ ही नहीं सकती थीं। उस चुनौती ने...।

अनीला

(**एकदम**) प्रेम क्या है केशव !

केशव

(**बैठकर**) दूसरे में स्वार्थ को पाना। हम डरे हुए हैं, इस डर से मुक्ति ही प्रेम की परिभाषा है।

अनीला

नहीं-नहीं केशव, आदमी गणित नहीं है। प्रेम कुछ नहीं चाहता, प्रेम स्वयं मुक्ति है।

केशव

(**हँस पड़ते हैं**) है, पर केवल भावना के संसार में, आकाश में, पुस्तकों में। इस धरती पर तो दो प्राणी प्राण रक्षा के लिए, स्वार्थ के लिए पास आते हैं, एक-दूसरे से परच जाने को विवश होते हैं और एक दिन प्रेम के देवता बन जाते हैं। (**खड़े होकर**) और प्राणी ही क्यों; अक्सर आदमी किसी विचार से भी ऐसा ही विकट प्रेम करने लगता है (**व्यंग से**) जैसे तुम चुनौती से; बदले की भावना से कर रही हो। यह गणित नहीं तो क्या है ?

अनीला

(**कांपकर उत्तेजित**) केशव, केशव तुम इतने क्रूर हो सकते हो ?

केशव

सत्य सदा क्रूर होता है। और फिर मैं तो चीर-फाड़ करने वाला डाक्टर भी हूं।

अनीला

डाक्टर तो मैं भी हूँ।

केशव

लेकिन नारी भी हो।

अनीला

नारी जब क्रूर होती है...

केशव

तो सब सीमायें लांघ जाती है।...तुम भी यही करने जा रही हो।

अनीला

(एकदम) हां, मैं यही करूंगी, यही करूँगी। मैं तुमसे कहती हूँ मैं उसे मार डालूँगी। सच केशव, मैं यही निश्चय करके लौटी हूं...।

(सहसा लीला का प्रवेश)

लीला

डाक्टर!

अनीला

ओह! मिस जोसेफ! हम अभी आते हैं, अभी!

(अनीला तेजी से जाती है)

केशव

(सहसा ठिठककर लीला से) डा० सईदा से कहो कि आपरेशन दो दिन बाद होगा...

लीला

(मिस जोसेफ क्षण भर चकित-सी देखती है, फिर मुस्करा उठती है) जी, जी बहुत अच्छा।

(दोनों जाते हैं, परदा गिरता है।)

तीसरा अंक

(दो दिन बाद)

(रंगमंच पर नर्सिंग होम के आपरेशन थियेटर का दृश्य। सामने शीशे की दीवार[1] है। केवल बाईं ओर दो दरवाजे खुले हैं। दूर वाला दरवाजा उस कमरे में जाता है जहां से आपरेशन सम्बन्धी सामान लाया जाता है। पास वाला दरवाजा बाहर आने-जाने का मार्ग है। परदा जिस समय उठता है उस समय वहां कोई विशेष सामान नहीं है। तेजी से रामू के साथ मिस लीला जोसेफ आती है। दोनों दूसरे कमरे में जाते हैं। दो क्षण बाद रामू मास्क और केप पहने एक ट्रॉली लेकर आता है। उसे धीरे-धीरे एक ओर रखता है। दो क्षण बाद मिस जोसेफ कुछ औज़ार लेकर आती है। वह ड्रेस अप[2] कर चुकी है। वह औजारों को ट्रोली पर रखती है और पुकारती है।)

लीला

रामू ! डा० केशव एनसथीसिया[3] का सामान ठीक कर गये हैं। उसे छेड़ना नहीं।

---

१. आवश्यकता और सुविधानुसार इस सैट में परिवर्तन किये जा सकते हैं।

२. आपरेशन के लिये डाक्टर विशेष वस्त्र पहनते हैं, उसे 'ड्रेसअप' करना कहते है।

३. रोगी को बेहोश या उसके शरीर के किसी भाग को सुन्न करने का सामान।

रामू

(ट्रॉली लाता हुआ) लीजिये मिस साहेब ! अपनकू छेड़ने की क्या दरंकार । हम छुएंगा भी नहीं ।

(ट्रॉली को लाकर एक ओर रखता है । उस पर आक्सीजन सिलेण्डर, गैस सिलेण्डर और इन्ट्रावीनिस इन्जेक्शन आदि का सामान है । उसे रखकर वे फिर अन्दर जाते हैं और स्केलपल (चाकू) और आरटरी फोरसेप्स आदि लाकर रखते हैं । फिर अन्दर जाते हैं और तीसरी ट्रॉली लाते हैं और उस पर स्टेरेलाइज बक्स है जिसमें मास्क, कोट, ग्लोब्स और तौलिये हैं । उसके बाद आपरेशन वाली मेज को बीचोंबीच लाते हैं, रोशनी के ठीक नीचे । उस पर बड़ी स्वच्छ रबर बिछी है । दो क्षण वह सब ट्रॉलियों की जांच करती है फिर रामू से कहती है ।)

लीला

अच्छा रामू । तुम अब डाक्टर केशव को खबर देगां ।

रामू

जी देगां सहसा एक ओजार उठाकर) मिस साहब । इसको क्या बोलता !

लीला

शी शी शी, अब बातें नहीं । पढ़ लो इस पर लिखा हुआ है ।

रामू

अपनकू पढ़ना आता तो आपसे पूछता ।

लीला

(खीझ कर) रामू, इतने दिन हो गया, अब तक पढ़ना क्यों नहीं सीखा ?

रामू

यह हमारा बदकिस्मती है मिस साहब, पण, अब हमने खुशकिस्मत होने को फैसला कर लिया है। इस आपरेशन के बाद हम शादी करेगां।

लीला

शादी करेगां। बेवकूफ ! पढ़ने से शादी का क्या वास्ता ?

रामू

आं, बहुत बड़ा वास्ता मिस साहब ! आखिर अपने शादी भी करना और पढ़ना भी। दोनों काम अलग-अलग करेगा तो खर्च वेशी होगां। हमारे प्रधान मन्त्री कहता कि खर्च कम करो। मुल्क को पैसे की जरूरत है। हम मुल्क से मोहब्बत करता सो हमने तय किया कि हम शादी करेगां।

लीला

और पढ़ेंगा नहीं।

रामू

वही तो मिस साहब आप समझा नहीं। हम पढ़ी-लिखी, बी० ए० पास बीबी से शादी करेगां। वह हमारी

बीबी होगा, हमारा घर रखेंगा और हमें पढ़ायेगाँ और इस तरह...

लीला

पढ़ाई का खर्च बच जायेंगा (**खूब जोर से हँसती है**) बेवकूफ !...

रामू

अब आप समझा... अं, क्या कहा बेवकूफ ! ना मिस साहब ! अपन बहोत सोच-समझ कर फैसला किया है। मुल्क का सब लोग ऐसा ही करेगां तो कितना पैसा बचेंगा और मुल्क अमीर बन जायंगा।

लीला

(**खूब हँसती है**) तुझे सूझी तो दूर की पर बेवकूफ ! बी० ए० पास लड़कियां तेरे जैसों से शादी क्यों करेंगी।

रामू

आँ क्यों नहीं करेगां ? उनको काम जो मिलेंगा ? नहीं तो इतना सब औरत लोग पढ़कर क्या करेंगा। और हां, अगर कोई तुम्हारी तरह डाक्टरी भी पढ़ा हो तो हम डाक्टर भी बन जायंगा। दवा-दारु का खर्च बचेंगा। अपन समझता कि हर बीबी को डाक्टर होना चाहेंगा।

लीला

(**हँसते-हँसते एकदम**) अच्छा, अच्छा। अब तू चुपचाप डा० केशव और दीदी को बता कर आ।

रामू

जाता है मिस साहब ! पण अगर अपनकू डाक्टरी आ जाय तो अपन दीदी की खूब मदद करेगा। दोनों मियाँ बीबी करेंगा। तुम्हारी जरूरत नहीं रहेंगा...

(तेजी से जाता है। लीला फिर व्यस्त हो जाती है। तभी डा० सईदा आती है। काफी गम्भीर है। आते ही इंजेक्शन करती है। फिर सब कुछ देखती है। इसी बीच में लीला पास आकर बातें शुरू कर देती है।)

लीला

डाक्टर ! मिस्टर सतीशचन्द्र शर्मा आये थे। बड़े घबरा रहे थे।

सईदा

उनका घबराना ठीक है, लीला। मरीज़ा अब भी बहुत कमज़ोर है। गाल ब्लैडर में स्टोन है, उसे काटना पड़ेगा। इस उमर में बीवी को कुछ हो जाय तो...

लीला

सुना था आप को केन्सर का शक था।

सईदा

कुछ कहा नहीं जा सकता। शायद ऐसा कुछ नहीं है। कमर में दर्द के कारण मुझे शक हुआ था। **(फिर कान में कुछ कहती है। लीला भी गम्भीर होती है)** कुछ भी हो लीला। मुझे मिस्टर शर्मा पर बड़ी दया आती है।

लीला

सभी को आती है।

सईदा

बेचारा अपनी पत्नी को कितना प्यार करता है।

लीला

और डा० अनीला पर उसको कितना भरोसा है। लेकिन डा० अनीला हैं कि उससे मिली तक नहीं। मुझे तो...

सईदा

यह राज़ अब तक समझ में नहीं आया। उनसे क्यों नहीं मिली क्यों...मुझे डर लगता है कि आज...

लीला

मिस्टर शर्मा आज पूछते थे कि डा० अनीला कहां की रहने वाली है। कब से नर्सिंग होम खोला है।

सईदा

तुमने क्या कहा ?

लीला

वैसे ही इधर-उधर की बातों में टाल दिया। फिर पूछने लगे विधवा कब हुई ?

सईदा

यह नहीं पूछा कि दूसरा विवाह क्यों नहीं किया ?

लीला

पूछा था।

सईदा

(एकदम) तुमने क्या कहा ?

लीला

मैं क्या कहती ? दूसरों की जिन्दगी में गहरा उतरने का मुझे क्या अधिकार है ?

सईदा

(हतप्रभ) तुमने ठीक किया लीला, ठीक किया।... डा० केशव पांच साल से कह रहे हैं पर वे हैं कि बार-बार इन्कार कर देती हैं। कोई बात है जो वह सबसे छिपा रही हैं। (**काम करती रहती है।**)

लीला

लेकिन डाक्टर ! यह भी कैसी बात है कि इस राज़ को छिपाकर दीदी इतना ऊंचो उठ गई। बड़ा दुख, बड़ा दर्द होता होगा।

सईदा

ज़रूर होता होगा मिस जोसेफ। कभी-कभी दुःख और दर्द ही इन्सान को ऊँचा उठा देते हैं। यह दूसरी बात है कि बहुत कम इन्सान उस ऊँचाई पर ठहर सकते हैं।

लीला

ठहरें कैसे ? वह ऊँचाई कच्ची जो होती है।

सईदा

(**शीघ्रता से औजारों की ट्रॉली के पास जाती है**) ओह

लीला, होती होगी, बहस में पड़कर कहीं कोई चूक न कर बैठना।

लीला

नहीं डाक्टर। लीला चूकने वाली नहीं है।

सईदा

मैं जानती हूं फिर भी...अच्छा मैं मरीजा को लाने का प्रबन्ध करूं (**जाते-जाते**) न जाने क्यों मुझे आज डर लग रहा है। न जाने क्या होने वाला है...काश कि डा० अनीला बीमार हो जाय। नहीं तो, नहीं तो...

(तेजी से बाहर जाती है। लीला नहीं सुनती। चुपचाप काम करती है। फिर आपरेशन-मेज के पास आकर उसे ठीक करती-करती फुसफुसा उठाती है।)

लीला

कभी-कभी दुःख और दर्द इन्सान को ऊँचा उठा देते हैं लेकिन यह दूसरी बात है कि बहुत कम इन्सान उस ऊँचाई पर ठहर सकते हैं।...नहीं ठहर सकते क्योंकि वह ऊंचाई कच्ची होती है।...आज देखना है कि दीदी ठहरती है या नहीं। क्या इस मेज के सामने खड़ी होकर वह डाक्टर की प्रतिज्ञा याद रख सकेगीं? क्या...

(तेजी से सतीशचन्द्र शर्मा का प्रवेश। बेहद घबराहट के चिह्न उनके मुख पर स्पष्ट हैं।)

स० च० शर्मा

हैलो !

लीला

(**चौंक कर**) हैलो (**देखकर**) आप यहां क्यों आ गये ?

स० च० शर्मा

सब ठीक है ?

लीला

सब ठीक है । आप चिन्ता न करें । आप जायं ।

स० च० शर्मा

जीहां, पर यह डा० केशव कौन हैं ?

लीला

आप उन्हें नहीं जानते । प्रसिद्ध एनसथेटिस्ट हैं। इस ओर दूर-दूर तक एनसथीसिया देने में उनसे बढ़ कर कोई नहीं है । डा० अनीला ने उन्हें खास तौर पर बुलाया है । दोनों बड़े मित्र हैं ।

स० च० शर्मा

ओह सच । सुना तो है कि बड़े कुशल हैं ।

लीला

जीहां, जीहां । मेहरबानी करके आप बाहर बैठियेगा। आपने गोपाल को भेज दिया, यह बड़ा अच्छा किया ।

स० च० शर्मा

भेजना पड़ा । आपकी दीदी डा० अनीला मानी ही

नहीं । अच्छा, आपरेशन तो डा० अनीला ही करेगी । सुना था कि डा० केशव करनेवाले थे...

लीला

जी आम तौर पर गाल ब्लेडर जैसे आपरेशन लेडी डाक्टर नहीं करती पर, दीदी तो कालेज में करती रही है इसीलिये वे हो करेंगी ।

स० च० शर्मा

और डा० केशव ।

लीला

कहा न कि वह तो एनसथीसिया देने के लिये आये हैं । आप जाइये न । मुझे खेद है कि आप अन्दर नहीं आ सकते । यकीन रखिये सब कुछ ठीक है और आगे भी ठीक ही होगा ।

स० च० शर्मा

सच, ठीक होगा ? क्या डा० अनीला मेरी पत्नी को बचा लेगी ?

लीला

वह यही कोशिश कर रही है । हर डाक्टर यही कोशिश करता है । आप कृपा करके...

स० च० शर्मा

जीहां । आप मुझे तुरन्त बता देना और बीच में भी...देखिये । बड़ी कृपा होगी...

लीला

जरूर...जरूर... ।

स० च० शर्मा

'धन्यवाद, शुक्रिया ।

(जाता है। लीला दो क्षण देखती है, फिर गरदन हिला कर कहती है)

लीला

आदमी कितना दुर्बल है कितनी जल्दी घबरा जाता है ?

(सईदा का प्रवेश)

सईदा

लीला ! डाक्टर ने सोडियम पैन्टोमाल[1] के लिये मना कर दिया है। स्पाइनल एनसथीसिया[2] देना होगा।

लीला

वह भी तैयार है।

सईदा

तो तुम्हें पहले ही पता था। तभी डाक्टर अनीला का तुम पर इतना भरोसा है।

लीला

(हँसती है) दीदी को तो सभी पर भरोसा है।

---

१. इन्ट्रावीनस इन्जेक्शन देकर बेहोश करने वाली दवा।

२. आपरेशन वाले भाग को सुन्न कर देने की क्रिया।

सईदा

ना लोला ! सब पर होता तो शादी न कर लेतीं ।

लीला

(हँस कर) कैसी बात है ? घूम-फिर कर हम हर बार दीदी की घरेलू जिन्दगी की चर्चा करने लगते हैं ।

सईदा

(हल्प्रभ) हमें ऐसा नहीं करना चाहिये । (एकदम) हां, मिस जोसेफ ! मरीजा आ रही है, आपरेशन रूम के पास कोई न आए ।

लीला

जीहां, सबको उधर बैठने को कह दिया है । वैसे मैं फिर देखे लेती हूँ ।

(जाती है, नीरु आती है)

नीरु

(झांक कर) मरीजा चल दी है ।

सईदा

मालूम है, आप जाएं ।

नीरु

घबराने की कोई बात नहीं । बादल उठेंगे, उमड़ेंगे, घुमड़ेंगे पर बिना बरसे लौट जाएंगे ।

सईदा

(तेज़ी से) तुम अपने कमरे में चलो...चलो । यहां रोज मरीज आते है, रोज आपरेशन होते हैं, मरना-जीना

तक होता है पर दूसरे मरीज सोचते तक नहीं। न जाने इस बार क्या हुआ है।

नीरु

(जाते-जाते) अपने से पूछो, आइने में अपनी सूरत देखो, तो जवाब मिलेगा।

सईदा

(पीछे पीछे) ओह! तुम जाओ, जाओ नीरु।

(दोनों जाती हैं और तभी स्ट्रेचर पर मरीजा को लिये चार व्यक्ति आते हैं। मरीजा शान्त लेटी है। छाती का भाग सफेद चादर से ढका है। मुख, सिर दोनों खुले हैं। मुख का कुछ पीला-पीला भाग दिखाई देता है। पीछे-पीछे लीला आती है। आगे आकर वह आपरेशन टेबुल के पास आ जाती है।)

लीला

इधर, इधर ले आओ।

(तभी डा० सईदा भी आ जाती है। स्ट्रेचर को मेज से सटा दिया जाता है और लीला-सईदा सब मिल कर मरीजा को बहुत सावधानी से मेज पर लिटा देते हैं।

सईदा

बस... बस... धीरे... हां, धीरे बस...

(चारों व्यक्ति जाते हैं। डाक्टर सईदा मरीजा की जाँच करती है। तभी डा० केशव आते है।)

केशव

रोशनी ठीक कर दो, मिस जोसेफ!

लीला

अभी लो डाक्टर।

(रोशनी तेज़ होती है। केशव मास्क और टोपी लगाकर कई क्षण मरीजा की स्टेथ्सकोप से जांच करते हैं, फिर मुस्कराकर मरीजा से कहते हैं)

केशव

घबराना नहीं मिसेज शर्मा ! तुम बहादुर औरत हो। कुछ ही देर की बात है। तुम्हें पता भी न लगेगा और सब कुछ ठीक हो जायगा। (मुड़कर) मिस जोसेफ ! इन्जेक्शन।

लीला

अभी लो (एनसथीसिया वाली ट्रोली सरकाती है) यह लो डाक्टर।

(केशव इन्जेक्शन तैयार करते हैं। लीला तब तक मरीजा से हँस कर कहती है।)

लीला

आपकी सेहत बड़ी अच्छी है। पता भी न लगेगा। न...न...इस तरह दिल छोटा मत करो, घबराओ नहीं। डा० अनीला ने बड़ी मेहनत की है।...

सईदा

ये तो बिल्कुल ठीक है। ये भला क्यों घबराएंगी ?

केशव

हां, तुम अभी तगड़ी हो। तुम्हें ज़िन्दा रहना है। (मुड़कर) मिस जोसेफ। करवट लिटा दो।

(सईदा मिस जोसेफ की सहायता से मरीजा को करवट दिलाते हैं। डा० केशव पीठ में सुई लगाते हैं। उसके बाद लम्बर पंकचर नीडल लगाते हैं। एक क्षण रुकते हैं। नीडल में से एक बूंद पानी टपकता है। उसी में फिर सुई लगाकर पिचकारी से दवा डालते हैं। फिर नीडल आदि निकाल लेते हैं। मरीजा टेढ़ी ही रहती है। गरदन उठी रहती है। इसी बीच में अनीला आकर एक निगाह उन पर डालती है फिर रुक कर मरीजा को देखती है। केशव बराबर नब्ज पकड़े हैं।)

केशव

तैयार हो जाओ, डाक्टर।

अनीला

क्या मैं ड्रेसअप कर लूं ?

केशव

बेशक ! सब कुछ तैयार है।

(लीला ब्लड प्रेस्सर देखने का सामान लाती है)

लीला

डाक्टर, यह लीजिये !

केशव

ओह मिस्टर ! तुम तो...मैं कहने ही वाला था।

(कहकर वह मरीजा का ब्लड प्रेस्सर देखते हैं। नर्स और डा० सईदा सहायता करते हैं। इसी बीच में डा० अनीला ड्रेसअप

करती है । सहसा उसका मुख गम्भीर हो जाता है । वह बोलती नहीं पर कभी तो बहुत धीरे-धीरे हरकत करती है, कभी एकाएक रुक जाती है । कभी-कभी डा० केशव, डा० सईदा उसे देखते हैं । एकाएक अनीला चौंक कर बोल उठती है ।)

अनीला

(**चौंककर**) क्या है ?

केशव

कुछ नहीं, सब ठीक है ।

अनीला

(**संभल कर**) ओह...

केशव

क्या हुआ डाक्टर ?

अनीला

(**फीकी हंसी**) कुछ नहीं, वैसे ही पूछती थी, ब्लड प्रैस्सर ठीक है न ।

केशव

बिल्कुल ठीक है ।

(**अनीला तेजी से डंसअप करती है । करती-करती तेजी से फिर गरदन हिलाती है । डा० सईदा घबराकर पास आती है पर अनीला तुरन्त मुस्करा पड़ती है ।)**

अनीला

सईदा ! ब्लड प्लाजमा तैयार है ।

सईदा

जीहां ।

अनीला

तो चालू कर दो ।

(सईदा मुड़कर नर्स की सहायता से ब्लड प्लाज्मा देती है। अनीला तब तक ग्लोब्स निकाल कर पहनती है। आपरेशन की मेज के पास आती है। डा० केशव इशारा करते हैं कि सब ठीक है। वह नब्ज संभाले रहते हैं। अनीला पेट उघाड़ती है। मरीजा को देखकर मुस्कराती है और पेट पर आयोडिन पेन्ट करती है। करने के बाद पूछती है)

अनीला

(मुस्करा कर) कैसी तबियत है आपकी ?

सईदा

(मुस्करा कर) बिल्कुल ठीक । ठीक है डाक्टर। देखो तो मुस्करा रही हैं ।

(अनीला चमिटी से खाल पकड़ती है)

अनीला

क्यों दर्द होता है ?

सईदा

(मरीजा को देखकर) बिल्कुल नहीं । इनको पता भी नहीं लग रहा ।

(अनीला एकाएक जैसे खो जाती है । खाल को चमिटी से पकड़े रहती है। सईदा देखकर कहती है)

अब शुरू करें ।

अनीला

(चौंककर चमिटी रखती है) हाँ, (केशव से) नब्ज ठीक है ?

केशव

ठीक है डाक्टर ।

अनीला

बहुत अच्छा ।

(अनीला मरीजा के पेट पर तौलिये रखती है । आपरेशन जहां करना है उतना भाग छोड़ कर सबको ढक देती है)

अनीला

सिस्टर !

लीला

जी डाक्टर !

अनीला

स्केलपल ।

लीला

सब तैयार है ,

(औजारों वाली ट्रोली को पास करती है । अनीला स्केलपल उठाती है । तेजी से कांपती है । केशव बोल उठे

केशव

(धीरे से) डाक्टर !

अनीला

क्या है ?

केशव

तुम्हारा हाथ कांप रहा है।

अनीला

नहीं तो (वह दृढ़ता से चाकू पकड़ती है) नहीं।

(उसके चेहरे के भाव तेज़ी से बदलते हैं। एक बार मरीजा के पेट को देखती है फिर केशव को, जो मुस्करा पड़ता है। एक क्षण उसी को देख कर वह चाकू को दृढ़ता से पेट पर रखती है। डा० सईदा ग्रारटरी फोरसेप्स लेकर ग्रागे ग्राती है। तभी मंच पर प्रकाश मन्द होने लगता है ग्रौर तुरन्त पूर्ण ग्रन्धकार हो जाता है। केवल ग्रापरेशन वाली मेज़ के ग्रासपास धुंधला-सा लाल प्रकाश रहता है। धुंधली मूर्तियां दिखाई देती हैं। उसी समय नेपथ्य में से एक ग्रावाज़ उठती है। शरारतभरी, प्रतिहिंसा पूर्ण। इस ग्रावाज के साथ प्रकाश पड़ता रहता है। वह प्रकाश मरीजा पर नहीं पड़ता केवल तीनों डाक्टरों के मुख ग्रौर हाथों पर पड़ता है। ग्रनीला मधुलक्ष्मी का नाम सुन कर कांपती-सी है। फिर तुरन्त दृढ़ हो जाती है।)

ग्रावा[1]

डा० ग्रनीला! शाबास, यही सुनहरी ग्रवसर है। ग्रपनी इच्छा पूरी करो। ग्रपना बदला लो, नारी के ग्रपमान का बदला लो।... सुनो ग्रनीला। सुनो! मैं

१. यह ग्रावाज़ पहले से रिकार्ड की जा सकती है।

मधुलक्ष्मी हूं, मुझे भूलो मत। मैं ही तुम्हारे जन्म का, तुम्हारी प्रगति का, तुम्हारी शोहरत का कारण हूं। मैं नारी का बदला चाहती हूँ। मैं पुरुष को तड़पते देखना चाहती हूँ। बह जाने दो रक्त... निकल जाने दो प्राण... नस-नाड़ियों को बन्द मत करो...सईदा को परे हटा दो, वह तुम्हारी शत्रु है। तुम सुनती नहीं...तुम सुनती नहीं, अनीला ! अनीला ! देखो, देखो, केशव की ओर न देखो। इस गाल ब्लेडर को देखो, कैसा खराब है, न, न, इसे काटो मत, इसे काटो मत, (तीव्र स्वर) नहीं, नहीं, रुको, रुको, तुम सुनहरी अवसर खो रही हो, तुम आत्महत्या कर रही हो, तुम शत्रु को प्राण दे रही हो, तुमने इसे मार डालने का निश्चय किया था, तुमने— (हताश क्रोध) ओह काट दिया, तुमने गाल ब्लैडर काट दिया, तुमने सईदा को नहीं हटाया, तुमने केशव की बात मानी (अल्प विराम जैसे धौंकनियां चलती हों। फिर एकदम तेज) अब भी अवसर है, छोड़ दे, फोरसेप्स अन्दर छोड़ दे, सी मत, सी मत, ओह, ओह, तू नहीं सुनती, नहीं सुनती, ओह, ओह, तूने मुझ पर ही छुरी चला दी, तूने मधुलक्ष्मी की हत्या कर दी, तू अपने अपमान को भूल गई, अपनी प्रतिज्ञा को भूल गई।

(एकदम प्रकाश होने लगता है, उसी के साथ आवाज एकदम समाप्त, डाक्टर मरीजा की पट्टी करती दिखाई देते हैं। लीला

एकदम बाहर जाती है और तुरन्त चार व्यक्ति स्ट्रेचर लिये आते हैं। मरीजा को धीरे-से उस पर लिटा कर ले जाते हैं। नर्स भी जाती है। पूरा प्रकाश होता है। सब ड्रेस उतारने लगते हैं कि सहसा डा० अनीला कांप कर संज्ञाहीन-सी होकर गिरती है। डा० केशव संभालते हैं।)

केशव

डा० अनीला क्या है ?

(अनीला केशव के कन्धे पर गिर जाती है)

सईदा

डाक्टर, डाक्टर।

अनीला

(संभल कर) कुछ नहीं। कुछ नहीं !...

(तेजी से दादा आते हैं)

दादा

कहां है डाक्टर अनीला ? कहां है ?

अनीला

(कांप कर) दादा ! दादा !!

(तेजी से दौड़ कर चिपट जाती है। दादा प्यार से उसे थप-थपाते हैं)

दादा

इस मेज के पास आकर तुम कुछ और कर ही नहीं सकती थी। कुछ और हो ही नहीं सकता था।

(तेजी से श्री शर्मा की आवाज उठती है)

शर्मा

मैं उनसे जरूर मिलूंगा, जरूर! एक मिनिट के लिये। बस...

नीरु

हाँ-हाँ, जाने दो। अब जाने दो।

रामू

नहीं, नहीं अन्दर नहीं, अभी अन्दर नहीं जायंगा, नहीं जायंगा।

शर्मा

एक मिनट, बस एक मिनिट।

नीरु

जाने दो बाबा। जाने दो ना।

(अनीला चौंकती है)

अनीला

दादा !

दादा

(धीरे-धीरे) अब कोई डर नहीं। (जोर से) आने देगां रामू।

(तेजी से शर्मा, नीरु व रामू का प्रवेश)

शर्मा

(बोलता आता है) डाक्टर आपने मुझे बचा लिया। आपने मुझे जीवन दिया। मै...

(तभी सहसा दृष्टि मिलती है जैसे भूकम्प का तेज धक्का लगता है। चीखते-चीखते रह जाता है)

आप...आप...दादा...

दादा

(आगे बढ़ता हुआ) हां, मैं दादा, कर्नल माधव, तुम्हारा साला।

अनीला

(एकदम) दादा, मुझे अभी शशि के पास जाना है

(शर्मा से) आपकी पत्नी का आपरेशन सफल हुआ। वह जल्दी तगड़ी हो जायगी। बधाई।...आओ केशव।

केशव

चलो।

(दोनों तेजी से जाने को मुड़ते हैं। शर्मा और भी हत्प्रभ-कम्पित। तभी दादा कहते हैं)

दादा

यही थी डा० अनीला, तुम्हारी पहली पत्नी मधुलक्ष्मी शर्मा, जिन्हें तुमने पन्द्रह वर्ष पहले इसलिये छोड़ दिया था कि तुम्हारे अफसर बन जाने के बाद वह तुम्हारे योग्य नहीं रही थी। कम पढ़ी-लिखी थी। सोसायटी में घूम-फिर नहीं सकती थी, बैठ-उठ नहीं सकती थी, खा-पी नहीं सकती थी...

(दादा तेजी से बोलते चले जाते हैं, दूसरे सब लोग चकित कम्पित एक दूसरे को देखते हैं, शर्मा मुड़कर चीखते से हैं)

शर्मा

मधुलक्ष्मी ! मधुलक्ष्मी !!

(केशव और अनीला तब तक बाहर पहुंच चुके हैं)

दादा

मधुलक्ष्मी मर चुकी है। यह डाक्टर अनीला, और तुम्हारे लिये केवल डाक्टर।

(कहता-कहता शर्मा को प्यार से थामकर बाहर ले जाता है। बाकी लोग जो बुत बने खड़े हैं, सहसा मुस्करा पड़ते हैं। यहीं परदा गिरता है)

◇ ◇